ॐ

श्री सत्‌नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 अक्टूबर 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 12

संस्थापक : सदगुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश







दीपावली महापर्व पर मंगलमयी शुभकामनाएँ

दीपावली लक्ष्मी पूजन 25 नवम्बर 2003, शनिवार

(सायं 6:20 बजे से रात्रि पर्यन्त)

महालक्ष्मी पूजन

सरल विधि

पूजन समय : वृषभ स्थिर लग्न में सायं 6:20 बजे से रात्रि पर्यन्त

भगवती लक्ष्मी चल, अचल, दृश्य, अदृश्य सभी सिद्धियों विधियों की अधिष्ठात्री देवी है। श्री गणेश स्वामी रिद्धि–सिद्धि, शुभ–लाभ के स्वामी सभी अमंगलों एवं विघ्नों के विनाशक हैं। अतः लक्ष्मी का पूजन श्री गणेश के साथ करना चाहिए। किसी चौकी व शुद्ध कपड़े पर गणेश के दाहिने भाग में माता लक्ष्मी को स्थापित करना चाहिए तथा स्वयं नवीन पवित्र वस्त्र धारण करके श्रद्धा भक्ति पूर्वक पूर्व या उत्तराभिमुख होकर शुद्ध आसन पर बैठें। केसर से युक्त चन्दन का अष्टदल बनाकर उस पर रुपयों को स्थापित करके एक साथ दोनों की पूजा करनी चाहिए। आचमन, मार्जन, प्राणायाम, गुरुस्मरण करके पूजा का संकल्प करना चाहिए। सर्वप्रथम गणेश, तदन्तर कलश षोडशमातृका, नवगृह ओंकार का पूजन करके श्रीलक्ष्मी माता का पूजन करना चाहिए। कोई मंत्र याद न हो तो *''ॐ महालक्ष्मयै नमः''* मंत्र बोलकर लक्ष्मी माता की पूजा करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करें :–

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि, ॐ महालक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि,

कहकर दोनों समय फूल चढ़ावें फिर जल से निम्न मंत्रों का उच्चारण करें :–

ॐ महालक्ष्म्यै नमः पाद्यम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः अर्ध्यमि समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः आचमनीयम समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्नानम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः पंचामृतम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः पुन शृद्धोदक स्नानम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः आभूषणम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै गन्धम् (चन्दन का तिलक) समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सिन्दूरम समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः कुकुमम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः पुष्पम् समर्पयामि,
ॐ महालक्ष्म्यै नमः पुष्पमाला समर्पयामि ।

महालक्ष्मी के पूजन के पश्चात् दीवालों पर *''ॐ गणेशाय नमः''* शुभ–लाभ आदि शब्दों पर *''ॐ देहली विनायकाय नमः''* मंत्र द्वारा गंधाक्षत पुष्प से पूजा करें। दुकान पर पूजा करनी हो तो लेखनी को *''ॐ महाकाल्यै नमः, ॐ लेखनीस्थायै देव्यैनमः''* कहकर गंधाक्षत पुष्प चढ़ावें।

बही खातों पर स्वास्तिक चिन्ह 卐 (गणेश छापे) हल्दी की गांठ, धनिया, कमल गट्टा, अक्षत, द्रव्य फल रखकर *''ॐ महासरस्वत्यै नमः'', ''ॐ गणपतये नमः''* कहकर पूजा करें। तिजोरी पर स्वास्तिक चिन्ह 卐 छापकर *''ॐ कुबेराय नमः''* कुबेर की पूजा करें। यदि किराने की दुकान हो तो तराजू पर स्वास्तिक चिन्ह बनाकर *''ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः''* कहकर पूजा करें।

अन्त में 11 या 21 दीपक किसी पात्र में जलाकर महालक्ष्मी के समीप रखकर ''दीपावल्यै नमः'' मंत्र से गंधाक्षत पुष्प चढ़ाकर पूजा करें। तत्पश्चात् पूर्वाधिमुख पूजन करते हुए दीप को प्रज्वलित करते समय निवेदन करें कि दीप देवता जब तक मेरी साधना चले आप अखण्ड प्रकाश देते रहें और मेरी साधना की सफलता में सहयोग करें। दीपमालिका का पूजन करें अपने लोकाचारनुसार संतरा, ईख, पानीफल, चावल के फुले चढ़ाकर महालक्ष्मी जी की कपूर ज्योत जलाकर आरती उतारें। पुष्पांजली अर्पित करके प्रार्थना के बाद सभी को प्रसाद बाँटें ।

श्री महालक्ष्मी जी की आरती





ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत, हर-विष्णु-धाता ।।ॐ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।ॐ।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ।।ॐ।।
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधिकी त्राता ।।ॐ।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ।।ॐ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पान का वैभव-सब तुमसे आता ।।ॐ।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ।।ॐ।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।ॐ।।

गुरु मन्त्र का प्रभाव

स्कंद पुराण के ब्रह्मोत्तरखण्ड में कथा आती है कि काशी नरेश की कन्या कलावती के साथ मथुरा के दाशार्ह नामक राजा का विवाह हुआ। विवाह के बाद राजा ने अपनी पत्नी को अपने पलंग पर बुलाया। पत्नी ने इनकार कर दिया। तब राजा ने बल प्रयोग की धमकी दी। पत्नी ने कहा– स्त्री के साथ संसार व्यवहार करना हो तो बल प्रयोग नहीं, स्नेह प्रयोग करना चाहिए।

नाथ ! मैं आपकी पत्नी हूँ फिर आप मेरे साथ बल प्रयोग करके संसार व्यवहार न करें।

आखिर वह राजा था, पत्नी की बात सुनी–अनसुनी करके नजदीक गया। ज्यों ही उसने पत्नी का स्पर्श किया, त्यों ही उसके शरीर में विद्युत जैसा करंट लगा। उसका स्पर्श करते ही राजा का अंग–अंग जलने लगा। वह दूर हटा और बोला, क्या बात है ? तुम इतनी सुन्दर और कोमल हो फिर भी तुम्हारे शरीर के स्पर्श से मुझे जलन होने लगी ?

पत्नी– नाथ ! मैंने बाल्यकाल में दुर्वासा ऋषि से शिवमंत्र लिया। यह जपने से मेरी सात्त्विक ऊर्जा का विकास हुआ है और इसीलिए मैं आपके नजदीक नहीं आती थी। जैसे अंधेरी रात और दोपहर एक साथ नहीं रहते वैसे ही आपने शराब पीने वाली वैश्याओं और कुलटाओं के साथ जो संसार भोग भोगे हैं उससे आपके पाप के कण आपके शरीर में, मन में, बुद्धि में अधिक है और मैंने जप किया है, उसके कारण मेरे शरीर में ओज, तेज, आध्यात्मिक कण अधिक हैं इसीलिए मैं आपसे थोड़ी दूर रहकर आपसे प्रार्थना करती थी। आप बुद्धिमान हैं, बलवान हैं, यशस्वी हैं और धर्म की बात भी आपने सुन रखी है फिर भी आपने शराब पीने वाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ भोग–भोगे हैं।

राजा : तुम्हें इस बात का पता कैसे चल गया ?

रानी : नाथ ! हृदय शुद्ध होता है तो यह ज्ञात हो जाता है।

राजा प्रभावित हुआ और रानी से बोला– तुम मुझे भी भगवान शिव का वह मंत्र दे दो।

रानी : आप मेरे पति हैं। मैं आपकी गुरु नहीं बन सकती। आप और मैं हम दोनों गंगाचार्य महाराज के पास चलते हैं। दोनों गुरुजी के पास गये और गुरु जी से प्रार्थना की। गुरु जी ने स्नान आदि से पवित्र हो, यमुना तट पर अपने शिवस्व रूप के ध्यान में बैठकर राजा रानी को निगाह से पावन किया। फिर शिवमंत्र देकर अपनी शोभवी दीक्षा से राजा पर शक्तिपात किया। कथा कहती है कि देखते–ही देखते कोटि–कोटि कौए राजा के शरीर से निकल–निकल कर पलायन कर गये। काले कौए अर्थात् तुच्छ परमाणु। काले कर्मों के तुच्छ परमाणु करोड़ों की संख्या में सूक्ष्म दृष्टि द्वारा देखे गये। सच्चे संतों के चरणों में बैठकर दीक्षा लेने वाले सभी साधकों को इस प्रकार के लाभ होते ही हैं। मन बुद्धि में पड़े हुए तुच्छ कुसंस्कार भी मिटते हैं। आत्म–परात्म प्राप्ति की योग्यता भी निखरती है। व्यक्तिगत जीवन में सुख–शांति सामाजिक जीवन में सम्मान मिलता है तथा मन बुद्धि में सुहावने संस्कार भी पड़ते हैं और भी अनगिनत लाभ होते हैं जो निगुरे मनमुख लोगों की कल्पना में भी नहीं आ सकते।

मंत्रदीक्षा के प्रभाव से हमारे पाँचों शरीर के कुसंस्कार व काले कर्मों के परमाणु क्षीण होते जाते हैं। थोड़ी ही देर में राजा निर्भार हो गया और भीतर के सुख से भर गया। शुभ अशुभ हानिकारक व सहायक जीवाणु हमारे शरीर में रहते हैं जैसे पानी का गिलास होंठ पर रखकर वापस लायें तो उस पर लाखों जीवाणु पाये जाते हैं यह वैज्ञानिक बोलते हैं। परन्तु शास्त्रों ने तो लाखों वर्ष पहले ही कह दिया था।

सुमति-कुमति सबके उर रहहिः

जब आपके अन्दर अच्छे विचार रहते हैं अब आप अच्छे काम करते हैं और जब भी हलके विचार आ जाते हैं तो आप न चाहते हुए भी कुछ गलत कर बैठते हैं गलत करने वाला कई बार अच्छा भी करता है तो मानना पड़ेगा कि मनुष्य शरीर पुण्य और पाप का मिश्रण है आपका अन्तःकरण शुभ और अशुभ का मिश्रण है। जब लापरवाह होते हैं तो अशुभ बढ़ जाता है। अतः पुरुषार्थ यह करना है कि अशुभ क्षीण हो जाये और शुभ पराकाष्ठा तक, परमात्मप्राति तक पहुँच जाये।

भारती प्रेम प्रकाशी, कानपुर

कार्तिक-व्रत-माहात्म्य

एक दिन सत्यभामा ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा कि मैंने पूर्व जन्म में कौन सा दान, तप, व्रत किया था, जिससे मैं आपकी अर्धांगिनी हुई हूँ। इसके बारे में भगवान श्रीकृष्ण सत्यभामा को बतलाते हैं कि सत्ययुग के अन्त में हरिद्वार में अत्रि कुलीय एक देवशर्मा नामक ब्राह्मण थे, वे सूर्योपासक थे। उनकी गुणवती नाम की एक कन्या थी, जो चन्द्र नामक पुरूष को ब्याही थी।

देवशर्मा एवं चन्द्र में पिता–पुत्र जैसा स्नेह एवं आदरभाव था। एक दिन वे दोनों कुश कह समिधा लेने वन में गये वहाँ एक राक्षस ने उन दोनों को मार डाला उन दोनों के धर्मात्मा होने के कारण मेरे पार्षदों ने उन्हें बैकुण्ठ में पहुँचा दिया। उनकी सूर्योपासना से मैं उन दोनों पर बहुत ही सन्तुष्ट था। सूर्य, शिव, गणेश, विष्णु और शक्ति के उपासक भी मुझे प्राप्त होते हैं। जैसे वर्षा का जल सब ओर से समुद्र में ही जाता है, उसी प्रकार इन पाँचों के उपासक मेरे पास ही आते हैं यथा–

सौराश्च शैवा गाणेशा बैष्णवाः शक्ति पूजकाः।
मामेव प्राप्नुवन्तीह वर्षायः सागरं यथा।।

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड ६०/६३)

भगवान आगे पाँचों का एकत्व करते हुये कहते हैं कि–

एकोऽहं पंचघाजातः क्रीडया नाममिः किळ।
देवदत्तो यथा कश्चित्पुत्राद्याह्मननायमिः।।

मैं एक ही हूँ, तथापि लीला के अनुसार भिन्न–भिन्न नाम धारण करके पाँच रूपों में प्रगट हुआ हूँ। ठीक उसी तरह, जैसे कोई देवदत्त नामक एक ही व्यक्ति पुत्र–पिता आदि भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है।

गुणवती ने जब पिता और पति के मारे जाने का समाचार सुना, तो वह उनके वियोग दुख से पीड़ित होकर बहुत प्रकार से विलाप करती रही। फिर कुछ देर बाद शान्त होकर पिता और पति का पारलौकिक कर्म किया। फिर उसी नगर में रहती हुई वह विष्णु भजन में समय व्यतीत करने लगी। उसने कार्तिक व्रत का पालन किया। यह व्रत मुझे बहुत ही प्रिय है। यह पुण्य, पुत्र, धन, भोग और मोक्ष देने वाला है। जो कार्तिक मास में प्रातःकाल स्नान और भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, वे महापातकी होने पर भी मुक्त हो जाते हैं।

जो कार्तिक में स्नान, जागरण, दीपदान और तुलसीवन का पालन करते हैं, वे साक्षात् भगवान विष्णु के स्वरूप हैं। जो विष्णु मन्दिर में झाड़ू देते हैं, स्वस्तिकादि निवेदन करते हुए श्री विष्णु पूजन करते हैं, वे जीवन्मुक्त हैं। जो कार्तिक में तीन दिन भी इस नियम का पालन करते हैं वे देवताओं के लिए वन्दनीय हो जाते हैं। फिर जो लोग जीवन भर इस व्रत का पालन करते हैं उनका तो कहना ही क्या है।

इस प्रकार गुणवती ने नियमित रूप से कार्तिक व्रत का पालन और श्री विष्णु भगवान का पूजन किया। अन्त समय में वह जरा जर्जरावस्था में ज्वर पीड़ित होने पर भी कार्तिक स्नान हेतु गंगा में गई। स्नान के बाद वह शीत से कपित होकर गि्र पड़ी, आकाश से विमान आया, वह दिव्य रूप धारण करके उस पर बैठ गयी, मेरे पार्षद उसे बैकुण्ठ ले गये। कार्तिक व्रत के पुण्य से उसे मेरे निकट स्थान मिला।

कालान्तर में जब मैं ब्रह्मादि देवताओं की प्रार्थना से भू–भार उतारने इस धरा पर अवतरित हुआ, मेरे पार्षदगण भी मेरे साथ आये। श्रीकृष्ण बोले कि हे कामिनि। जो तुम्हारे पति देवशर्मा थे, वे ही अब सत्राजित हुये हैं। हे शुभे ! चन्द्र शर्मा ही अक्रूर हैं और तुम गुणवती हो। कार्तिक व्रत के पुण्य से तुमने मेरी प्रसन्नता को बहुत बढ़ाया है।

पूर्व जन्म में तुमने मेरे मन्दिर के द्वार पर जो तुलसी की वाटिका लगा रखी थी, इसी से तुम्हारे आंगन में कल्पवृक्ष शोभा पा रहा है, पूर्व काल में तुमने जो दीपदान किया था, उसी के प्रभाव से तुम्हें यह स्थिर लक्ष्मी प्राप्त हुई है तथा तुमने जो अपने व्रतादि सम्पूर्ण कर्मो को पतिस्वरूप श्रीकृष्ण की सेवा में निवेदन किया था इसीलिये तुम मेरी पत्नी हुई हो। उस व्रत के प्रभाव से तुम्हारा मुझसे कभी भी वियोग नहीं होगा।

इस प्रकार जो कोई भी कार्तिक मास में परायण होता है, वह मेरे समीप आता है, जैसे कि तुम आई हो। केवल यज्ञ, दान, तप और व्रत करने वाले कार्तिक व्रत के पुण्य की एक कला के बराबर भी फल नहीं पा सकते हैं। इस प्रकार विश्वात्मा भगवान श्री कृष्ण के मुख से अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनकर महारानी सत्यभामा अति हर्षित हुई। कार्तिक व्रत का ऐसा माहात्म्य है।

सद्गुरु स्वामी श्री भगतप्रकाश जी महाराज की अन्तः प्रेरणा से :-

श्री सद्गुरु चरणारविन्द, चंचरीक
सुरेश सांवल प्रेम प्रकाशी, मुरेना



स्वास्थ्य ज्ञान

निरोगी रहने के लिए यहाँ कुछ स्वास्थ्य एवं ज्ञानवर्धक बाल सुलभ चुटकले सरल अर्थ के साथ दिए जा रहे हैं। जिन पर अमल करने से निरोगी एवं मस्त रहा जा सकता है। डॉक्टर व नीम हकीम के द्वार खटखटाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

१. ***खगचर तो दिन में चूगे, निशिचर रात्रि माय।***
नियम हमारा कुछ नहीं, कैसे हम सुख पायें।।

कबूतर आदि पक्षी दिन में ही दाना चुगते हैं रात्रि में उड़ने वाले उल्लू आदि पक्षी रात्रि में अपना भोजन खोजते हैं परन्तु हमारा भोजन करने का कोई भी दिन रात का समय निश्चित नहीं है फिर किस प्रकार हम सुख शान्ति पा सकते हैं।

प्रातः काल पानी पिए, दूध शाम के माही।
छाछ पिये आहार कर, तिन घर वैध न जाही।।

जो सवेरे उठकर पानी पीते हैं। शाम को ताजा गर्म दूध पीते हैं, आहार करने के बाद छाछ (मट्ठा) का सेवन करते हैं वे सदा स्वस्थ रहते हैं। उनको डॉक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं है।

३. ***छिलका लेय बादाम का, पुंगी सहित जलाय।***
नमक महीन मिलाइये, दांत देय चमकाय।।

बादाम के छिलके और पुंगी (सुपारी) इन दोनों को महीन नमक मिलाकर प्रतिदिन प्रातः मंजन करने से दांत मोती से चमकने लगते हैं।

४. ***जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।***

व्यक्ति जैसा अन्न खाता है वैसे ही उसके मन के विचार हो जाते हैं।

५. ***खाई के मुतै सुतै बाऊ, कहे के वैद्य बुलावे जाऊ।***

खाने के बाद एवं सोने से पूर्व लघुशंका करने से किसी चिकित्सक को घर में बुलाने की आवश्यकता नहीं है।

६. ***रोग का घर खांसी, लड़ाई का घर हांसी।***

समस्त रोगों की जड़ खांसी है इसी प्रकार किसी पर हंसना भी लड़ाई मोल लेना है।

७. ***चूना जल में फेंटिये, सरसों तेल मिलाय।***
जो प्रतिदिन मालिश करे, सुखी खुजली जाये।।

चूने के पानी में सरसों का तेल मिलाकर बार–बार फेंटना चाहिए फिर उस तेल से प्रतिदिन शरीर की मालिश करने से सूखी खुजली मिट जाती है। इससे शरीर स्वस्थ हो जाता है।

८. ***सूखी मालिश अश्व की, आधे घंटे होय।***
तो खुराक से अधिक ही शक्ति प्रदायक होय।।

सूखी मालिश जब घोड़े की आधे घंटे तक की जाती है, तो उसके स्वास्थ्य में बड़ा परिवर्तन होता है। ऐसा परिवर्तन खुराक से सम्भव नहीं। घोड़े की मालिश करने वालों का मत है कि खुराक से १८ गुनी ताकत मालिश द्वारा प्राप्त होती है।

९. ***लिटा धुप में पुत्र को, मालिश तेल कराया।***
तुरन्त लग पय पिपत ही, सुखा रोग मिटाए।।

शीतकाल में बालक को धूप में लिटाकर सरसों के तेल की मालिश करने से और तुरन्त दुहा हुआ गाय या बकरी का दूध पिलाने से बालक कुछ दिनों में ही स्वस्थ और सुन्दर हो जाता है।

१०. ***रहे निरोग जो कम खाए।***
बिगरे काम न जो गम खाए।।

जो व्यक्ति भूख से कम भोजन करता है वह सदैव निरोगी रहता है। इसी प्रकार जो वक्त बेवक्त समाज या परिवार में शान्ति धारण कर क्रोध पर काबू पाता है उसका कोई कार्य नहीं बिगड़ता है।

११. ***तैंहि की छाती एक न बाल।***
तेंहि ते रहो सदा होशियार।।

जिसकी छाती में एक भी बाल नहीं हो उससे सदैव होशियार रहना चाहिए। क्योंकि ऐसे व्यक्ति धोखेबाज होते हैं।

१२. ***गर्म चाय, ठ़ंडा नहाय।***
औसमें बसे, वैद्य हंसे।।

चाय गर्म पिये और स्नान ठंडे जल से करें तथा प्रातःकाल ओस पर चलने से शरीर निरोध होता है। ऐसा करने से वैद्य को भी प्रसन्नता होती है।

१३. ***भोजन करते समय जो पिये पानी, पहले पीवे वह जोगी।***
बीच में पिये भोगी, पीछे पिये रोगी।।

भोजन से पूर्व जल पीना योगी के लक्षण हैं। बीच में पीना भोगी के लक्षण हैं। बाद में पानी पीना रोगी के लक्षण हैं।

१४. ***विटामिन की पूर्ति हित, हरी सब्जी फल खाय।***
नेत्र रोग से मुक्तकर, सूखा रोग मिटाए।।

विटामिन की कमी पूरी करने के लिए हरी सब्जियों को उबालकर ही सेवन करें। तलने से विटामिन कम हो जाते हैं। मौसम में आने वाले स्थानीय फलों का अधिक सेवन करें। इससे नेत्र तथा शरीर रोगों से मुक्त होकर स्वस्थ सुन्दर होते हैं।

१५. ***पीस तुकमलंगा सलित में, फुंसी पर धर देय।***
पके फूटे फिर ठीक हो, शीतलता को लेय।।

फुंसी छोटी या बड़ी होने पर बहुत दर्द करती है। तब यदि पानी में तुक मलंगा पीस कर धर देने से ठंडक मिलती है। साथ ही पककर फूटकर या झड़कर ठीक हो जाती है।

१६. ***बादाम, मुनक्का, मिर्च को, मिश्री संग खाय।***
फिर गिलास भर पानी पिए, प्रतिदिन शक्ति बढ़ाए।।

बादाम, मुनक्का व काली मिर्च को समान मात्रा में लेकर उसमें इच्छा अनुसार मिश्री मिलाकर बड़े सवेरे निहार मुख चबाकर खाकर फिर ऊपर से एक गिलास दूध पीने से सिरदर्द दूर होकर शारीरिक व मानसिक शक्ति बढ़ती है।

१७. ***सौ पग चले खाय के जोई।***
ता को वैद न पूछे कोई।।

भोजन करने के उपरान्त कम से कम सौ कदम चलना आवश्यक है। इसे करने से भोजन का सही पाचन होता है। वैद्य की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती है।

१८. ***आँख में अंजन, दांत में मंजन नितकर नितकर नितकर।***
कान में तिनका, नाक में अंगुली मतकर मतकर मतकर।।

स्वस्थ शरीर के लिए नियमित रूप से आँख में काजल करना, दाँतों में मंजन करना आवश्यक है। साथ ही कान में तिनका, नाक में अंगुली कभी नहीं डालना चाहिए।

संकलन–***अर्जुनदास दयानी, कोटा***

शोक समाचार

श्री हरचन्दराय गिदवानी जी अमरापुर धाम सिधारे

आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रिय शिष्य ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज के सुपुत्र श्री हरचन्दराय जी गिदवानी प्रेम प्रकाशी ८२ वर्ष की आयु पूर्ण कर ८३ वें जन्म दिवस पर सत्‌नाम साक्षी, शिवोऽम् का स्मरण करते हुए श्री अमरापुर धाम सिधारे। स्वामी मनोहर प्रकाश जी के पूज्य पिता श्री हरचन्दराय गिदवानी जी का जन्म शिकारपुर के पास खानपुर सिन्ध में २६ अगस्त १६२१ को हुआ। सन्त सेवी भगवत परायण श्री हरचन्दराय जी ने अपनी सात सन्तानों में से द्वितीय पुत्र सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के श्री चरणों में समर्पित किया। जिन्हें आज हम पूज्य स्वामी मनोहर प्रकाश जी के रूप में जानते हैं। अशोक कुमार, योगेश कुमार (बबलू) के अतिरिक्त ४ पुत्रियाँ व धर्म पत्नी श्रीमती भगवती बाई जी आपके परिवार में हैं। दादा श्री हरचन्दराय जी का देहान्त २६ अगस्त २००३ को हुआ, इसी दिन आपका ८३वां जन्मदिवस भी था। ३० अगस्त को आपकी अन्तिम यात्रा में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज, सन्त जयदेव जी, सन्त किशोर प्रकाश जी के अतिरिक्त आपके सुपुत्र सन्त मनोहर प्रकाश जी व श्री अमरापुर स्थान का विद्यार्थी मण्डल अनेक प्रेमियों के साथ सम्मिलित थे। १ सितम्बर को तीये की बैठक (पगड़ी रस्म) में सन्त जयदेव जी, सन्त राजूराम जी ने विद्यार्थी समूह के साथ उपस्थित होकर दादाजी को पुष्पांजली अर्पित की। श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज भी सन्त मण्डल के साथ १६ सितम्बर को परिजनों को शोक सांत्वना व्यक्त करने हेतु जवाहर नगर, जयुपर में स्थित निवास पर पधारे।

टेलीफोन नम्बर बदला

स्वामी टेऊँराम, मीरा कृष्ण मंदिर, वारशा कॉलोनी बड़ौदा का टेलीफोन नम्बर 0265–2523479 के स्थान पर 0265–3093554 हो गया है। इच्छुक प्रेमी अपने पास नोट कर लेवें।

पुरूषार्थ व प्रार्थना से मन भक्ति की ओर अग्रसर होता है

(सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन श्री मुख से)

कुम्भ मेला नासिक की पावन अमृतमयी माँ गंगा से कुछ अमृत कलश भरकर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज अमृतमयी वचनों का रूप बनाकर कुछ अमृत बिन्दुओं की बरखा कर रहे है हम श्रद्धालुओं पर। पपीहे की भाँति जिज्ञासु जिज्ञासा रूपी मुख को खोलकर बैठें! ताकि एक एक अमृत बूँद का पान हो सके। यह शुष्क हृदय शीतल हो सके।

मानुष जन्म का लाभ यही है गोविन्द के गुण गाओ।
भोग विषय से चीत हटाके प्रभु में लगाओ
यह वेदों का प्रमाण सुनले देकर दोनों कान।
तुम पाओ प्रेमा भक्ति आनन्द अपारा।।
राम नाम गुणगान करके जिससे हो तेरा कल्याण।
प्रेमी प्यारा तुम पाओ प्रेमा भक्ति आनन्द अपारा।।
तुलसी वो दिन यादकर, जब उल्टा था ये शीश।
अब तो माया मोहया, भूल गया जगदीश।।

जिसकी कृपा से यह देह मिली। उस जगदीश को भुला दिया। जिसने सारा जगत दिया। उस जगतपति को ही भुला दिया।

गीता में श्री कृष्ण उपदेश देते हैं। अपनी यात्रा में अपने कदम ही काम आयेंगे। दूसरे तुम्हें मार्ग दिखा सकते हैं चलना स्वयं को ही होगा।

सत्गुरु संत ईश्वर धर्म।

ये सब सहायता और सहारा बनेंगे। कल्याण स्वयं करना होगा। पर आलस्य और प्रमाद से भरे हों तो ये सब मिलकर भी तुम्हारा साथ नहीं दे सकेंगे।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि अर्जुन उठ अपना कल्याण कर, ना कि यह कहा कि मैं तुम्हारा कल्याण कर दूँगा। थोड़ी सी लगन भी अगर तुम्हारे पास नहीं है। तो परमात्मा की तरफ से मिली कोई भी शिक्षा तुम्हारा साथ नहीं दे पायेगी।

मन को बार–बार समझाने की कोशिश की, मन नहीं माना। इन्द्रियों ने मन को फिर बहका लिया। तुम फिर माया वशीभूत हार गये, तुमने कोशिश की। ये प्रभु देख रहा है। तुम उस मन के पार नहीं जा पाये, तुमने पुरूषार्थ किया। ये देख रहा है वो। साधक फिर–फिर कोशिश करे। नाम सुमरन न छोड़े, साधना सेवा न छोड़े फिर प्रभु अपनी शरण में लेकर उसका सम्बल बनते हैं।

तू पग चलता एक है मैं पग चालूँ साठ।
जो तू करणा काठ समान, मैं लोहे की लाठ।।

ईश्वरीय शक्ति और तुम्हारा पुरूषार्थ, भक्ति का रास्ता सुलभ हो जाता है। दोनों ही चाहिये। पुरूषार्थ नहीं तो सारे कृपायें लौट जाती है। इसलिये महापुरुषों ने यही युक्ति अपनायी। जितना जोर चले पुरुषार्थ करें। फिर गुरूदेव की शरण ले लें। प्रार्थना में उतर जायें, तो फिर परमात्मा अपनी शक्ति का हाथ देता है। वर्ना तो यह मन बड़ा ही चंचल है।

यह मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ,
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाये।
सतुगुरु तेरे चरनों की, गर धूल जो मिल जाये,
सच कहती है दुनिया, किस्मत ही बदल जाये।।

जब मन पर जोर न चले। पुरुषार्थ पूर्ण करने पर भी फल पूर्ण न मिले, तब हृदय में प्रार्थना के स्वर फूट पड़ते हैं।

फल की इच्छा न करें, पुरुषार्थ पूर्ण करें। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है– "कर्म पर तेरा अधिकार है फल पर नहीं" पर जो शुभ कर्म का पुरुषार्थ करते हैं उसका फल अपने समय से जरूर फलीभूत होता है। ये निश्चित सत्य है। चाहे वह वर्तमान में फलीभूत होते ना दिखाई देते हों।

शिकायत करते हैं मेरा मन नाम में लगे। प्रार्थना करते हैं पर पुरुषार्थ नही, तो फिर उस शिकायत की कोई सुनवाई भी नहीं। मूल में पुरुषार्थ है बाद में प्रार्थना, करने की पूर्ण कोशिश पहले। फिर असहाय होकर करनी है प्रार्थना। वर्ना प्रार्थना भी अनसुनी हो जाती है।

सब बातों का मूल यही है गोविन्द के गुण गान,
और बात भले भूल भी जाओ, हरि को नाहीं भुलाना।
करते संत यही वाख्यान, कहता टेऊँ जप भगवाना,
प्रीतम प्यारा तुम पाओ प्रेमा भक्ति और आनन्द अपारा।।

यही माँगें, कि नाम मिले।

माँगन ते माँगना नीका, गुरु ते हरि जस माँगिये।

अगर सच्ची चाह है तो माँगना भी पुरुषार्थ में आता है। तो यही माँगें कि सच्ची प्रीत मिले, नाम मिले।

कुम्भ मेला नासिक

गुरुवचनों का अनुकरण करने पर गुरुकृपा सहज ही प्राप्त होती है

(सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन श्री मुख से प्रवाहित अमृत)

१. सत्‌गुरु जी शरण वठी, कई प्रेम पढ़ाई
तन मन जी गुरुअ गोद में, जहिं भेंट चढ़ाई
निर्मान थी निष्काम सभ मां सार खंयाईं
गुरुदेव सन्दे हुकुम जी तामील कयाईं
आज्ञा मञी सत्‌गुरु जी त मञी स्वामी सर्वानन्द
सेवा कई सत्‌गुरु जी त कई स्वामी सर्वानन्द
भक्ति कई सत्‌गुरु जी त कई स्वामी सर्वानन्द

२. नंढपणु सां ही पीतो हो जहिं प्रेम जो प्यालो
तृष्णा के करे तर्क कयो अंदर उजालो
संसार में भी रही भी रहयो सब खां निरालो
जुहदन सां करे जोग़ कयो अमर हुयो नालो
सफली कई देही त कई स्वामी सर्वानन्द
सेवा कई सत्‌गुरु जी त कई स्वामी सर्वानन्द

प्रेम की महिमा,

ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय।

प्रेम शब्द सुना है उसकी गहराई को नहीं समझा। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जिनका जन्मोत्सव यहाँ हम मना रहे हैं। उन्होंने वेदों से शास्त्रों से जो ज्ञान मिलता है। हृदय चढ़ा दिया। आचार्य श्री के चरणों में तो वही ज्ञान हृदय में स्वयं ही प्रगट हो गया। क्योंकि शास्त्र वेद बहुत हैं। कितना पढ़ेंगे। शास्त्रों का पार नहीं। पर प्रेम प्रगट हो गया। बचपन से ही समर्पित हो गये।

गुरु भक्ति बहुत कठिन है। जैसा गुरु कहे वैसे ही उन वचनों में खुद को ढालना। धीरे–धीरे से प्रयत्न करें। साधना करें। प्रयत्न करने वाले पर सत्‌गुरु की सहज कृपा होती है।

जैसे टार्च की रोशनी थोड़ी दूर तक उजाला करती है। फिर अंधेरा दिखाई देता है। डर लगता है। पर कदम कदम बढ़ाते चलते हैं तो सारी राहें तय हो जाती हैं। रोशनी साथ–साथ चलती है।

ऐसे ही साधक साहस करे तो गुरुकृपा साथ चलती है। मन का परिवर्तन देवताओं के गुण आ जायेंगे। देवताओं जैसा रूप नहीं चार हाथ आदि–आदि ऐसा कुछ नहीं नहीं। पर मन निरन्तर गति करेगा।

भगवान राम गुरु वशिष्ठ से जो वचनामृत पान करते सारी–सारी रात उसका मनन करते। सत्य को समझने के लिये रातों की नीदें भी गंवानी पड़ती है। साधक जोगी रातों को जागकर खोजते हैं, पुकारते हैं, साधना करते हैं।

जब दुनिया सोती है। प्रेमी–जोगी जागते हैं। अपनी विरहाग्नि को जला लेते है। उसी आग को प्रार्थना बना अपनी तड़प के दीये जलाते हैं। आसुओं का अमृत जल पहुँचाते हैं। चढ़ाते हैं उसके श्री चरणों में।

लगन लगी जब राम से, लोकन से क्या काम।
हुयी वृत्ति उसकी वैरागी, जिसने सारी तमन्ना त्यागी।
किया सारे जगत से किनारा, जिसकी महिमा सभी गा रहे हैं।
स्वामी सर्वानन्द साधु सचारा.........

ऐसा नहीं है ! जो भोग पदार्थ है वो सामने से हटा दिये। नहीं मन इन्द्रियों का चाव स्वतः ही उनकी तरफ से हट गया। मन तो नाम में रमण करने लगा और स्वाद सब फीके हो गये।

शंकराचार्य जी ने कहा है कि संसार की तरफ भागने वाली इन्द्रियां तुम्हारी दुश्मन हैं और परमात्मा की तरफ भागने वाली इन्द्रियाँ तुम्हारी मित्र हैं। मन रूपी दुश्मन को मोड़कर मनाकर अपना मित्र बना दिया। संतों, सदगुरु के साथ मित्रता करके, साधना का फल भी यही है। मन नाम में लगे वचनों में लगे, सत्‌संग में सेवा में लगे।

शरीर कहीं भी रहे, पर मन वृत्ति परमात्मा में रहे पर सबसे कठिन काम भी यही है। पर धीरे–धीरे संतों का संग लेकर पुरुषार्थ द्वारा सब संभव है। क्योंकि ऐसा संजोग संतों का संग, परमात्मा की चर्चा, सदगुरु का सानिध्य, देवताओं को भी लुभाने वाला पावन कुम्भ पर्व मन को पूर्ण रूपेण जगाने का सुन्दर अवसर है। सो जाग जावें समझ लें, यही सार है।

कुम्भ मेला नासिक

गुरु की महिमा अनन्त

(सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के मुखारविन्द से प्रवाहित गंगा)

मालिक पहिंजे गंज मां
झोल भरणी थई, दया करणी थई
सत्गुरु पहिंजे दास ते
जमदूतन जे जुलम जी
भय हरणी थई, दया करणी थई
सत्गुरु पहिंजे दास ते
हो अनाथ अतिशय दुखी डरयो देख संसार।
डूबत हूँ भव सिंधु में, प्रभु मोहे उतारो पार।।

तुम्हारे बिना मेरा कोई स्वामी नहीं है और मेरे जैसा कोई दुखी नहीं। मृत्यु का दुख बुढ़ापे का दुख जीवन का एक–एक क्षण मुझे निरन्तर काल के समीप ले जा रहा है। निरन्तर भोग भोगने की इच्छा मन के अनेकों रोगों की औषधी केवल गुरु के पास है, जैसे डॉक्टर को मरीज के मर्ज का पता होता है और उसकी क्या दवा है वो भी वही जानता है उसी तरह मन के किस रोग के लिये कौन–सी दवाई उपयुक्त है, कौन–सी युक्ति, कौन–सी शिक्षा उपयुक्त है गुरु जानता है।

गुरु ही वैराग्य आदि द्वारा मन को संसार से हटाकर परमात्मा में लगाता है। इसलिये गुरु की महिमा अनंत है।

''साँचा उपदेश देत सीख देत भली भली''

संतों का स्वभाव मात्र देना ही देना है। उनके कृपा के अखण्ड भण्डार में से कृपा का कण पाने का कोई भी अधिकारी जन होता है तो उसे खाली नहीं लौटाते हैं पर माँगना क्या ?

भव सागर से पार होने की युक्ति पूछें। सो गुरु महाराज जी भी पार होने की प्रार्थना करते हैं।

कहे टेऊँ गुरु बाझ जी
नजर धरणी थई दया करणी थई
सत्गुरु पहिंजे दास ते

कुम्भ मेला नासिक

शरणागत पर पूर्ण गुरू कृपा

(सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के श्री मुख से प्रवाहित ज्ञानामृते)

संत जगत में आते हैं जग तारण के लिये।
आधि व्याधि उपाधी अविद्या टारन के लिये।
अमर देश से अमर बनाने संत जगत में आते हैं।
अमर लोक से अमर बनाने संत जगत में आते हैं।
प्रेम के सागर जाम प्रेम का पीते और पिलाते हैं।
सत्पुरुषों का संग जगत में भवसारग से तारे।
संत संग से मिल परमसुख, दुख दर्द सब हारे।

तीन दुख इस जीव को सताते हैं।

मानसिक, शारीरिक, दैविक

आत्मा में दुख का लेशमात्र भी नहीं पर जब तक स्वरूप का ज्ञान न हो। तब तक देह अध्यास को भी महापुरुषों ने दुखरूप माना है। शरीर को अपना स्वरूप मानना। ये भी एक दुख है।

मानसिक क्लेश, चिन्तायें ये हैं मानसिक दुख और बीमारी आदि ये हैं शारीरिक दुख ये तीनों दुख महापुरुषों के सानिध्य से क्षीण हो जाते हैं।

गुरु हरि कृपा से सब सम्भव है। कथायें, इतिहास झूठे नहीं हैं।

गुरु कृपा से मूक भी वाचाल हो जायें पंगु भी पर्वत पर चढ़ने लग जायें। गुरु कृपा में इतनी शक्ति होती है। पर वो कृपा किस पर होती है। जो पूर्ण शरणागत है।

जो किनारे से लौट जाये गंगा में डुबकी न लगाये तो पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं होती। इसी प्रकार

जो गुरु दरबार आकर भी गुरु को समझने की भूल तार्किक दृष्टि तो फल की प्राप्ति नहीं होती। पर किनारे पर आने की आदत, धीरे–धीरे काम बनेगा। भक्ति श्रद्धा बढ़ेगी। गुरु की महिमा समझ में आयेगी। व्यर्थ न जायेगा।

निर्मल गंगा नीर नहाने भाग्यवान आते हैं।
बैठ किनारे लौट जो जाये, आनन्द न पाते हैं।
गुरु ज्ञान की गंगा में मगन हो डुबकी लगाना तुम।
जीवन तो अमोलक है इसे व्यर्थ न गंवाना तुम।
स्वासों की मिली पूँजी इसे न मुफ्त लुटाना तुम।
जीवन..

जिन्होंने डुबकी लगाई वो शीतल पावन निर्मल हो जाते हैं पर जो मात्र भरण करते हैं। उनका कार्य धीरे होता है। मन में कुमति और सुमति दोनों का निवास है। कभी कुमति दब जाती है कभी सुमति दब जाती है।

सुनते सुनते कुमति का खात्मा होता है। महापुरुषों की शरण में आते रहें। दर्शन सेवा जिज्ञासा करनी है। मनन करना सत्विचार पर ध्यान देना है। सत् विचार ज्ञानोपदेश जिज्ञासा प्रश्न उठते हैं। महापुरुष शंकाओं को निर्मूल कर देंगे। परलोक क्या है। अगम देश क्या है। शरीर क्या है आदि–आदि।

तू शरीर नहीं है। अपने आप को पिंजरा मान बैठा है। पर तूं पिंजरा नहीं है। तू तो तोता है। मतलब आत्मा है यह देह नहीं है। पिंजरा तेरा निवास है।

खम्ब दि़नई खाविंद खैराती।
ऐश बणांयुअि आत्म घाती।।
लोभ जो लाहे लिवेस पखीअड़ा छदि़ पिंजरे खे।
पिंजरो थई परदेश पखीअड़ा छदि़ पिंजरे खे।।

वीचार करने के बाद ही उस परमपद की तरफ चल पायेंगे।

पखी हुन पार जो आहे, आयो कुर्बो हिते कहि
दि़ठई तहिंखें नथो ठाहे, अथई टारिन पनन ओले
बदन जे बाग में तोतो, मिठा नित बो़ल थो बो़ले

स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने बाग में बैठकर हरे भरे वृक्षों और हरे तोतों को देखकर यह भजन बनाया जिस तरह हरी भरी डालियों में वह हरे रंग का तोता छिप गया है। दिखाई नहीं देता। ऐसे ही परमात्मा इस देह में छिप गया है। आसानी से दिखाई नहीं पड़ता। मन इन्द्रियों, प्राणों में वह तोता मिल जाता है। शरीर के संग शरीर भासता हैं पर ज्ञान द्वारा शोध भजन के शोध द्वारा अलग भासने लगता है।

एक पेड़ दो पंछी बैठे, एक गुरु एक चेला

प्रयत्न करो परम पद की प्राप्ति करो गुरु बाबा के भण्डार में कमी नहीं है। मन को मोड़ना है। कपड़ा जितना मैला होगा समय उतना ज्यादा लगेगा। जनम लगें, वर्ष लगें, महीने लगें या दिन लगें ये हमारे पुरुषार्थ पर है। गणना ईश्वर करे। कर्म हमारे बस में है।

कभी तो दीन दयाल के भनक पड़ेगी कान। उनकी कृपा होगी। जीवन सफल होगा।

दृढ़ विश्वास से मूर्ति में सत्गुरू होते है प्रकट

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज कुम्भ मेले में अमृत छलकाते हुए परम विद्वान, परम विरक्त, आदर्श शिरोमणि सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज नासिक कुम्भ मेले में अपने वचन सुधा का पान करते हुये कहते हैं।

बड़े भाग से नर तन पाया, गोस्वामी खोल सुनाया
पुरषार्थ तो कभी न किया, मानुष जन्म बेकार कर दिया
भूलके भी रामनाम कभी न लिया, मानुष जन्म बेकार कर दिया

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज अपने ही मन को समझाते हुये कहते हैं–

ये मानुष का तन तुम्हें किस लिये मिला है। परमात्मा तुमसे अलग नहीं, उसका स्वरूप हमसे जुदा नहीं है। कभी मन्दिर में जाकर देखो श्रीकृष्ण के स्वरूप को वही इन्द्रियाँ आँख, कान, हाथ, पैर वही आकार सब कुछ वैसा ही है। अन्य योनियों का आकार, समझ अलग है। पर हमारा स्वरूप बिल्कुल परमात्मा जैसा है। प्रभु ने अपना स्वरूप मनुष्य को

दिया है। क्यों ?

मेरे जैसे गुण धारण करके तू मुझको प्राप्त कर, इसलिये तुझपे ये कृपा की है।

देत ईश बिन हेत सनेही

सनेही = प्रेम करने वाला

अकारण प्रेम करने वाला – जो हिसाब किताब से तराजू में तौलकर दे वह प्रेम किसी न किसी कारण से जुड़ा है पर वो करुणा सागर बिना हेतु सनेही है, प्रेम करने वाला है, उसकी कृपा को हम कैसे सफल करें।

अगी आदत मट – त सिघा मिलेई सुपरी बस अपनी थोड़ी सी आदतें विचार बदलने पड़ेंगे। शरीर की वेश–भूषा बदलने से कुछ नहीं होगा। क्योंकि शरीर तो परिवर्तनशील है, मन को बदलना है।

बार-बार कहूँ तोय, सावधान क्यों न होय।
ममता की पोट, सिर काहे को धरत है।
मेरो धन मेरो धाम, मेरो घर मेरो गाँव
मेरो पशु मेरो नाम, भूलयो ही फिरत है।
तू तो भयो बावरो, बिकाय गयी मति तेरी।
ऐसे अंधकूप में, काहे रे गिरत है
सुन्दर कहे तोहे, नेक हू न आवे लाज
काज को बिगाड़ के अकाज क्यों करत है।

सुन्दर जी कहते हैं कि काज को बिगाड़के अकाज क्यों करत है। अपने काज को बिगाड़ने वाले आप स्वयं हो। कृपा स्वयं चली आती है। नित्य प्रातःकाल नया सूर्य उदय होता है हम भी प्रातः से ही अपने विचारों को नवीनीकरण दे दें, तो जीवन में ज्ञान का सूर्योदय हो जाता है। नहीं तो ?

रात गई दिवस गया, दिवस गई पुनि रात।
कहे टेऊँ इस मनुष्य की, आयु ऐसे जात।।

एक–एक दिन करके सारी आयु चली जाती है। पर अपने मन की वृत्ति सुरति कुछ भी परमात्मा की तरफ नहीं जाती है। हमारे सारे संकल्प ख्याल संसार की तरफ दौडते हैं। फिर जिन्होंने इसे समझा।

लोक सजो भली करे खुवारी, नाम सां जो नालो समझुयुमि भारी।
नाम सां नींह लगांया माँ, बियों संसो शोक न भायां मां।

एक तरफ लोक निंदा दूसरी तरफ परमात्मा का प्रेम तो मैने प्रेम का रास्ता चुना। निश्चय पक्का जैसे एकलव्य ने चुना, गुरु ने लौटा दिया तो गुरु की मिट्टी की मूर्ति बनाकर अभ्यास किया।

साक्षात् गुरु मेरे प्रत्यक्ष विराजमान हैं। मूर्ति मानकर नहीं। तो सारी शस्त्र विद्या में पारंगत हो गया। दृढ़ निश्चय किया मूर्ति में गुरु को प्रगट कर लिया। जो ज्ञान द्रोणाचार्य अर्जुन को नहीं दे पायें। वो एकलव्य ने अपनी दृढ़ निष्ठा से मूर्ति में से पा लिया। सारी आस्था की बात है।

मूर्ति सब कागज की, तीर्थ सब पानी।
श्रद्धा नहीं मन में, तो चारों वेद कहानी।।

तो जिसे हम मूर्ति समझते हैं उसमें ईश्वरीय शक्ति विराजमान है।

नहीं कागज कलम जरूरत है।
बिन रंग बनी एक मूरत है।
इस मूरत में इक सूरत है।
एक में अनेक दिखाय दिया।
कामिल काम कमाल किया।
तूने ख्याल से खेल बनाय दिया।

मूर्ति में बैठे पारब्रह्म परमात्मा के दर्शन कर लिये उनके जीवन की दिशा बदल जाती है। इसलिये कहा है– कि पहला साधन है गुरु मूर्ति का ध्यान, ध्यान बढ़ते–बढ़ते मूर्ति में ही गुरु प्रगट हो जायें। अपने अन्तःकरण की अपने मन की मैल अपने संस्कारों को साफ कर दिया। पर कोशिश आज से ही करो। कल से नहीं।

आज काल के कहते ही अवसर जासी चाल

फिर कुछ भी मिलने वाला नहीं यमकाल के आने से मृत्यु के आने से पहले जो अपने जीवन की घड़ियाँ नाम में ध्यान में सुमरन में लगाता है। ऐसी सम्बल शक्ति उसे मिलती है। जो परलोक का कठिन रास्ता है। वह भी सुगम हो जाता है। सो दुनियावी कामों से थोड़ा वक्त निकालके अपने कल्याण का साधन करें।

जो जैसा समय व्यतीत करता है वो वैसा बन जाता है। जो समय धर्म में धार्मिक कार्यों में लगाता है। फिर धर्म भी उसकी रक्षा करता है।

कष्टों से उलझनों से धर्म रक्षा करता है अपने मन को नाम में, शुभ कर्मों में सद्गुरु में लगावें।

–संकलन राधाठारानी, ग्वालियर

नासिक एवं त्रबंकेश्वर में अद्भुत सत्संग महायज्ञ

प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र में भगवत् लीला, श्री गुरु महाराज जी के आनन्द उत्सव एवं अन्य आयोजन

सिंहस्थ नासिक कुम्भ मेले की झलकियाँ

१. पूरे नासिक क्षेत्र में "प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र छावनी" के बड़े-बड़े होर्डिंग्स द्वारा प्रचार-प्रसार।

२. ५ अगस्त को ध्वजावन्दन, हवन, पाठ साहब से प्रेम प्रकाश छावनी कुम्भ मेले का शुभारम्भ।

३. पूज्य महाराज श्री के साथ संत मण्डल प्रेमियों के साथ गोदावरी स्नान।

४. १२ अगस्त रक्षा बन्धन को सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज का जन्मोत्सव दीपोज्वलन कर व केक काटकर मनाया गया।

५. १७ अगस्त मुख्य शाही स्नान में सभी सन्तों, प्रेमियों ने डुबकी लगाकर अपने आपको धन्य-धन्य बनाया।

६. २० अगस्त जन्माष्टमी महोत्सव पर झूला झांकी, खीर प्रसादी, महारास व नन्हे कृष्ण भगवान के स्वरूप का अनोखा दर्शन।

७. २२ अगस्त को सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का १०७ वाँ जन्मोत्सव हवन, पाठों के साथ शुभारम्भ।

८. २३ अगस्त नासिक कुंभ मेले की सबसे विशाल व आकर्षक शोभा यात्रा (जुलूस) प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र द्वारा निकाली गई।

९. २४ अगस्त को त्रम्बकेश्वर तीर्थ में भव्य सत्संग, दर्शन व कुशावर्त कुण्ड में सन्तों, प्रेमियों का स्नान।

१०. २५ अगस्त अमरापुर धाम पंचवटी में "विशाल संत भण्डारा" (महाप्रसादी) का आयोजन हुआ। जिनमें मण्डलेश्वर महन्त आदि सन्तों महापुरुषों ने प्रसादी ग्रहण की।

११. २६ अगस्त को पूरे नासिक क्षेत्र के ब्राह्मणों का "ब्रह्म भोज" किया गया।

१२. २६ अगस्त सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १०७ वाँ जन्मोत्सव, दीप, केक, बधाईयाँ आदि हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

१३. कुम्भ मेले में मुख्य द्वार शोभा यात्रा बड़े-बड़े होर्डिंग्स व त्रम्बकेश्वर की छावनी आकर्षण का केन्द्र रही।

१४. आये हुई यात्रियों के रहने के लिये श्री अमरापुर धाम के अतिरिक्त नवरंग मंगल कार्यालय, राजमाता मंगल कार्यालय, सौभाग्य मंगल कार्यालय, यशवंत मंगल कार्यालय, वृन्दावन, श्रीमंगल आदि कार्यालय में रहने की उचित व्यवस्थाएँ की गई।

१५. २७ अगस्त को सद्गुरू हरिदासराम जी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। इसी दिन द्वितीय शाही स्नान के उपलक्ष्य में सभी यात्रियों को प्रसादी वितरित की गई।

१६. नासिक कुम्भ प्रेमप्रकाश अन्न क्षेत्र में सम्मिलित होने वाले प्रेमियों की संख्या ५ हजार से अधिक दर्ज की गयी, देश विदेश के ३०० से अधिक नगरों से प्रेमी सश्रद्धा सम्मिलित हुए। आज तक के नासिक कुम्भ प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र में प्रेमी यात्रियों के सम्मिलित होने का यह सर्वाधिक रिकार्ड रहा।

श्री अमरापुर धाम, पंचवटी, नासिक से

(5 से 27 अगस्त 2003)

१. ध्वजा वन्दन, हवन, प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं भागवत् गीता के पाठ प्रारम्भ (इसका वर्णन अगस्त-सितम्बर अंक में दिया गया)

२. ८ अगस्त शाही स्नान एवं एकादशी

३. १२ अगस्त सत्यनारायण, नारियल पूर्णिमा एवं सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का जन्म महोत्सव फूल-पत्तियों-गुब्बारों से सुसज्जित हॉल में प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, सन्त अनन्त प्रकाश जी, सन्त हरिओमलाल, संत मोनूराम, भगत मूलचन्द, संत प्रतापराय ने सत्गुरु

महाराज जी के दिव्य जीवन पर प्रकाश डाला। सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज की विमल कीर्ति पर गान किया। सुन्दर महिमा के भजन, उनकी गुरु भक्ति भगवत् भक्ति उदारता, प्रेमदान, नम्रता, सहनशीलता के उदाहरण दिये गये। आनन्द का अद्भुत ज्वारभाटा (एकदम प्रवाह) तब आया जब सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा रचित भजन गाया गया।

सत्गुरु जो अजु जन्म मनायो।
देह धरे धरतीअ ते स्वामी शांतिप्रकाश आ आयो।।

प्रेमी, सन्त सभी झूमने लगे, एक सुन्दर झूला सजाया गया जिसमें सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का परम मनोहर चित्र सुसज्जित था। दीप प्रज्वलित किये गये एवं केक काट करके सभी को बधाईयाँ दी गयी।

४. १४ अगस्त सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज की पुण्य तिथि पर उनकी पवित्र यादगिरी में रचित वाणी संतों द्वारा गान की गई एवं त्रबंकेश्वर में संतों की सेवा विशेष रूप से की गयी, विशेष भण्डारा किया गया। १६ अगस्त त्रबंकेश्वर के मन्दिर के पुजारियों का भोजन भण्डारा किया गया।

५. १७ अगस्त को विशेष शाही स्नान के दिन गोदावरी मैया की राम कुण्ड की शोभा देखने योग्य थी। लाखों लोगों ने प्रातःकाल से स्नान प्रारम्भ कर दिया। ऐसा लग रहा था कि देवलोक से देवता पृथ्वी पर उतरकर आए हैं। श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र श्री अमरापुर धाम में पूरे दिन भर राहगीर यात्रियों ने भोजन प्रसादी पायी और धन गुरु टेऊँराम का गुणगान करके अपने आप को धन्य महसूस किया।

६. २० अगस्त भगवान श्री कृष्ण का पावन जन्म दिन जन्माष्टमी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनायी गई। पूर्ण पुरूषोत्तम श्री कृष्ण भगवान की महिमा का गान करते हुए सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने कहा :–

देह धरे का फल यही, भज मन कृष्ण मुरार।।
मनुष्य जन्म की मोज यह मिले न बारम्बार।।

रात्रि को १२ बजे तक विशेष कार्यक्रम रहा, सुन्दर पलना सजाया गया। एक छोटा सा बालक भगवान के स्वरूप में सभी का मन हरण किये जा रहा था। सभी प्रेमीजन खूब आनन्द से उत्साहित होकर के नृत्य कर रहे थे। एवं कीर्तन कर रहे थे।

नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की।

उसी दिन ही गुरु महाराज की मण्डली का प्रोग्राम होलाराम कॉलोनी के झूलेलाल मन्दिर में सिंधी पंचायत की ओर से चालीहा के उपलक्ष में सत्संग का आयोजन किया गया था। सत्गुरु महाराज एवं संतों ने भगवान एवं वरुण अवतार झूलेलाल भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहा कि भगवान धर्म की रक्षा के लिये बार–बार आते हैं।

७. २२ अगस्त से गुरु महाराज सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज का पावन जन्म महोत्सव प्रारम्भ हो गया, जिसमें रोजाना सत्गुरु महाराज के अमर चरित्र का गान संतों, महात्माओं द्वारा गाया गया। महाराज श्री की जयन्ती के उपलक्ष्य में तपोवन से षट दर्शन के सन्तों को आमंत्रित किया जाता था। जिसमें रोजाना सन्त समाज आकर भोजन पाते थे। जिसमें संतों को भोजन वस्त्र एवं धन की सेवा से सन्तुष्ट किया जाता था।

८. २३ अगस्त को भी सन्तों का भण्डारा एवं विशाल शोभा यात्रा निकाली गई, बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। आश्रम से लेकर बाजार से हो करके गोदावरी मैया राम कुण्ड पर आकर विसर्जित हुई। सत्गुरू महाराज जी के चित्रों से सुसज्जित हरिनाम संकीर्तन की मस्ती एवं सदगुरू भगवान के प्रेम में मस्त प्रेमी भक्तजन झूमते गाते कुम्भवासियों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे।

९. २४ अगस्त को त्रबंकेश्वर के याज्ञवल्क्य सेवा सदन में विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। नासिक से ३० बसों से प्रेमीजन त्रबंकेश्वर पहुँचे। प्रेमियों को पता होना चाहिए कि त्रबंकेश्वर में भगवान शिव का एक ज्योतिर्लिंग है, भगवान शिव के १२ ज्योतिर्लिंग है, जिनकी अद्भुत महिमा है या तो यह

स्वयंभू हैं या यह अवतारों द्वारा स्थापित है धन्य भागी है वह लोग जो आठ–आठ घण्टे लाईन में लग कर भगवान श्री के दर्शन कर रहे थे। गुरु महाराज का काफला त्रबंकेश्वर पहुँचा। पहले संत मुरलीधर (खैरथल) की देख रेख में चल रहे स्वामी टेऊँराम अन्न क्षेत्र में पधारे, तत्पश्चात् भवन में आये महापुरुषों की जमातों की जमातें आने लगीं, अद्भुत विलक्षण दृश्य था। सन्तों की भोजन परसा जा रहा था। गुरु महाराज की वाणी का पाठ हो रहा था। प्रेमियों द्वारा सेवा की जा रही थी। भोजन के बीच में मन्त्रों एवं महिमा स्त्रोतों का उच्चारण किया जा रहा था। प्रेम प्रकाशी सन्तों द्वारा भी मन्त्रों एवं श्लोकों का उच्चारण हो रहा था। षट दर्शन के साधु भोजन सेवा पाकर के बहुत ही सन्तुष्ट हो रहे थे।

एक महापुरूष ने बताया कि **भोजन है पुरुष, भेंटा है स्त्री,** दोनों के मिलने से पुण्य रूपी पुत्र की प्राप्ति होती है। सन्तों के भोजन के बाद में गुरु महाराज जी सगंत के साथ कुशावर्त कुण्ड पर पधारे संतों एवं प्रेमियों के साथ स्नान किया यह भी एक अद्भुत दृश्य था। तत्पश्चात् याज्ञवलक्य सदन पधारे वहाँ सत्संग हुआ तत्पश्चात् अपने प्रेमियों का भण्डारा हुआ। भण्डारे के बाद गुरु महाराज सन्तों, प्रेमियों के साथ नीलगिरि पर्वत पर पधारे जहाँ से ब्रह्मगिरि पर्वत का दृश्य मनमोहक लग रहा था। ब्रह्मगिरि से ही गोदावरी जी प्रगट हुई हैं। वहीं पर ही गौतम गुफा है एवं गुरु गोरखनाथ गुफा है वहाँ पर एक अद्भुत दृश्य है। अपने आप जल गिर रहा है और सीधा शिवलिंग पर आकर पड़ता है एक बात बहुत ही मन को छूने वाली लगी कि बोया हुआ सत्कर्म का बीज कब फलीभूत हो जाये, जिस याज्ञवलक्य सदन में अपना यह कार्यक्रम हुआ वहीं बोर्ड पर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का नाम लिखा था। उस सदन को बनाने में महाराज श्री ने अधिक सहायता की थी। यह सब देखकर सभी का चित्त प्रसन्न हुआ। किसी जमाने में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज वहाँ पधारे होंगे। रास्ते में चक्र तीर्थ पड़ता है जहाँ पर गोदावरी मैया का दर्शन बद्रीनारायण वाली सरस्वती मैया की स्मृति दिलवाता है जहाँ पर एक स्कूल भी है वहाँ पर गुरु महाराज जी ने बच्चों को खर्ची प्रसाद, अध्यापकों को शिक्षा एवं गांव में भी प्रसाद बांटा। बहुत ही अच्छा लग रहा था। त्रबंकेश्वर भगवान के दर्शनों के लिये भी महाराज श्री गये और महापुरूषों से भी मिले विरक्त शिरोमणि स्वामी ज्ञानदेव जी महाराज से भी मिले। जिन्होंने महाराज श्री का हार्दिक स्वागत किया। विरक्ती सन्त महाराज श्री को प्रणाम कर रहे थे संत ज्ञानदेव जी महाराज ने सभी सन्तों प्रेमियों को जलपान करवाया सन्त ज्ञानदेव जी महाराज निर्मल चित्त वाले महापुरुष हैं। तत्पश्चात् महाराज श्री प्रेमियों सहित नासिक पधारे।

१०. २५ अगस्त नासिक में सन्तों के विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। समष्टि एवं वेष्टि भण्डारा रखा गया। जिसमें महामण्डलेश्वरों को भी आमंत्रित किया गया था। भोजन करवाने में तो सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज एवं उनका मण्डल सिरमोर है। (यह शब्द मेरे नहीं है यह वहाँ के संतों के हैं)

११. २६ अगस्त को ब्रह्म भोज का आयोजन किया गया वेद पाठी ब्राह्मण मन्त्र उच्चारण के बाद में भोजन कर रहे थे क्या महिमा कही जाए उस घड़ी की, क्योंकि ब्राह्मण भगवान के मुख हैं। सन्तों एवं ब्राह्मणों के खिलाने से सीधा भगवान के पास पहुँचता है लिखा है जैसे :– गर्भवती स्त्री को खिलाने से उसमें स्थित गर्भ वाला बच्चा भी पोषित हो जाता है। ऐसे सन्तों ब्राह्मणों के हृदय में भी भगवान का निवास है।

अर्न्तयामी गर्भगत सन्त सुन्दरी मांहिं
रज्जब पोषे एक के दोनों पोषे जाहि

१२. २६ अगस्त सत्गुरू सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया। उस घड़ी की महिमा का क्या वर्णन किया जाए कलम को ताकत नहीं, देवलोक से देव भी आनन्दित हो रहे होंगे। पूज्य महाराज श्री, स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, स्वामी देवप्रकाश जी

महाराज, स्वामी रामकृष्ण जी महाराज (पूना), सन्त जयदेव जी, सन्त नामदेव जी, सन्त अनन्त प्रकाश जी, सन्त हरिओमलाल जी, सन्त मोनूराम जी, सन्त प्रतापराय जी, सन्त दयाप्रकाश जी, अमरापुर विद्यार्थी समूह, सन्त झामनदास जी, सन्त भगतप्रकाश (आगरा), सन्त सन्तूराम (नन्दुरबार वाले), स्वामी सन्तोषदास (इन्दौर), स्वामी ब्रह्मदास कल्याण, साँई रूपाराम साहिब और भी बहुत संत महात्मा गुणीजन, कलाकार उत्सव में पधारे। कुम्भ का मेला विलक्षण है। सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने कहा है–

मेला तीन प्रकार का राजस, तामस दोय,
तीजा सात्विक जानिये पर कुम्भ जैसा नहीं कोय

कहे टेऊँ काहीं ऐसा मेला नाहीं
देखा मेला कुम्भ का गंगा के किनारे

सत्गुरु प्यारे तां कुरबान जहिं द्रेखारियो कुम्भ जो मेलो

गुरु महाराज जी का जन्म महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। एक विशाल केक बनवाया गया, १०७ दीपक प्रज्जवलित किये गये। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज गुरुभक्ति की साक्षात् मूर्ति हैं। सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं सभी सन्त मण्डली भी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज की दिलोजान से महिमा गा रहे थे। आज प्रेमियों के मन में खुशी तो थी ही साथ–साथ हृदय में वेदना भी महसूस कर रहे थे। २२ दिनों से चल रहे इस ब्रह्मयज्ञ में जो आनन्द लूटा वो आनन्द फिर मिलेगा। इस हृदय की वेदना प्रेमियों के अश्रु पूर्ण नेत्र बता रहे थे। आज कुम्भ के मेले की भी पूर्ण आहुति हो रही थी। राजमाता, नवरंग, यशवंत, वृन्दावन आदि में ठहरने वाले सभी सेवाधारी और प्रेमी गुरु महाराज के प्रेम में इतने मस्त थे कि सभी को शारीरिक कष्ट का कोई भान ही नहीं हो रहा था। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की जय–जयकार के साथ खूब खुशी का इजहार किया। मेले की समाप्ति का पल्लव पाया गया।

२७ अगस्त मुख्य शाही स्नान था। आज सत्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज जी की वर्सी महोत्सव मनाया गया। सभी सन्तों ने सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की महिमा का वर्णन किया। सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सिद्धान्तों का दिलोजान से पालन किया। सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज को सभी प्रेमियों ने भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शांति के दोहों का पाठ किया गया एवं सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जी की कैसेटस् चलाई गई। इस बीच में अगल–बगल के तीर्थों पर भी यात्री दर्शनों के लिये गये।

जैसे :– शिरडी, शनि सिगांरपुर, कल्याण आदि दर्शनों के लिये भी गये। शनि सिंगारपुर में शनिदेव का मन्दिर है व आश्चर्य की ये बात है कि वहाँ घरों दुकानों में खिड़कियाँ एवं दरवाजे नहीं हैं।

३० अगस्त को महाराज श्री **मुम्बई** में पधारे ३० अगस्त और ३१ अगस्त **खार प्रेम प्रकाश मन्दिर** पर सत्संग सरिता में प्रेमियों ने स्नान किया।

१ सितम्बर को संतों एवं प्रेमियों के साथ **रामेश्वरम्** के लिये रवाना हुये।

२ सितम्बर को **मद्रास** पहुँचे। मद्रास में प्रेमियों ने सुन्दर व्यवस्था की थी। स्टेशन से प्यारे ठाकुरदास जी के घर पर पधारे। प्यारे ठाकुरदास का आज नया भवन धन्य–धन्य हो गया। गुरु महाराज जी के साथ लगभग ५०–६० के बीच में प्रेमी, भक्तजन थे। ठाकुरदास एवं पदमावती ने महाराज श्री के स्वागतार्थ भजन गाया। पंडित बिहारीलाल ने मंत्र उच्चारण किये। सत्गुरु महाराज की आरती के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

३ सितम्बर **रामेश्वरम** पहुँचे। प्यारे उद्धवदास एवं प्रकाशलाल पहले ही पहुँच गये थे। बैण्ड बाजों के साथ महाराज श्री का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् सीताराम बाबा के आश्रम पर आये उसके बाद में अग्नि तीर्थ में सभी ने स्नान किया तत्पश्चात् रामेश्वरम् मन्दिर में प्रवेश किया। महाराज श्री ने पूजा अर्चना की। रामेश्वरम १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जब भगवान श्रीराम ने रामेश्वरम् की स्थापना की तब भगवान से रामेश्वरम् का अर्थ पूछा गया। तब भगवान श्री राम बोले रामेश्वर यानी राम + ईश्वर। राम के ईश्वर पार्वती ने शंकर भगवान से रामेश्वर का अर्थ

पूछा तो उन्होंने कहा राम है ईश्वर जिसके यानी मेरे इष्ट राम हैं। परस्पर एक दूसरे से अद्भुत प्रेम करते हैं। भगवान श्री राम ने रामेश्वर की महिमा करते हुए कहा है जो रामेश्वर पर आ करके गंगा जल चढ़ाएगा वह सालोक मुक्ति (मेरे लोक) को प्राप्त होगा।

जो गंगाजल आन चढ़ाइहि,
सो सायुज्य मुक्ति जन पाईहि।
जे रामेश्वर दर्शन करिहै,
ते तनु तीज मम लोक सिधरिहै।।

कितने ही प्रेमी सबेरे पाँच बजे मणी दर्शन के लिये गए। रामेश्वर में और भी कई दर्शनीय स्थल है।

१. जैसे विभीषण शरणागति
२. गंध मादन पर्वत (जहाँ पर हनुमान लंका जाते समय रूके थे।)
३. पंचमुखी हनुमान

उसके सामने नल नील द्वार स्पर्श किये हुए पत्थर जो अभी भी तैरते हैं। बड़े–बड़े पत्थर तैरते हुए दिखाई दिये और भी कई दर्शनीय स्थल थे। सभी प्रेमी बहुत आनन्दित दिखाई दे रहे थे।

४ सितम्बर को बस द्वारा **मदुरई** के लिऐ रवाना हुए। वहां पर प्यारे प्रदीप ने सुन्दर व्यवस्था की थी। यहां माता मीनाक्षी (पार्वती) देवी का विशाल भव्य मन्दिर है। मन्दिर का गेट २०–२५ फुट ऊँचा, इसके ऊपर नौ मन्जिल और ऊँचाई ऐसे ६ द्वार थे। एक–दो द्वार पर हजारों देवी देवताओं की मूर्तियाँ थीं। वहाँ पर भी महाराज श्री ने सन्तों प्रेमियों के साथ बैठकर पूजा अर्चना की वहीं सुदरेश्वर भगवान का मन्दिर है। एक विलक्षण मन्दिर है। जिसमें भगवान शिव पार्वती के साथ विवाह कर रहे हैं और भगवान विष्णु कन्यादान कर रहे हैं। एक स्वर्ण कमल का कुण्ड भी है। जिसके कमलों से इन्द्र माता की पूजा करते हैं। शाम को प्यारे प्रदीप गुरु महाराज सन्तों भक्तों को अपने निवास स्थान पर ले गए प्रदीप की माता के नेत्रों से प्रेम के आँसू छलक रहे थे।

५ सितम्बर सबेरे बस द्वारा **कन्याकुमारी** के लिए रवाना हुए। रामेश्वरम् से आते हुए रास्ते में नवग्रह का मन्दिर समुद्र के बीच है जिसका पूजन महाराज श्री राम ने किया था वहाँ पर भी महाराज जी ने पूजा अर्चना करवाई।

कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानन्द केन्द्र में रूकने की व्यवस्था थी। बढ़िया शांतिपूर्ण, सौम्य वातावरण वाला आश्रम था। कन्याकुमारी में भी माता पार्वती का मन्दिर है जहाँ पर माँ पार्वती ने दानव बाणासुर को मारने के लिए तप किया था यहाँ की प्रथा कुछ अलग ढंग की है यहाँ मन्दिर में दर्शन करने वाले पुरुष को शरीर के ऊपर का भाग नंगा करना पड़ता है। कन्याकुमारी के मन्दिरों में यही प्रथा है। इसका कारण यह बताया गया कि जैसे गान्धारी के शक्तिपात करने से देवघन का शरीर वज्र जैसा हो गया था ऐसे ही इस बात को लेकर के ऐसा किया जाता है। कन्याकुमारी मन्दिर में महाराज श्री ने सन्तों के साथ पूजा अर्चना की। सुचिन्द्र मन्दिर में भी महाराज श्री ने पूजा अर्चना करी सुचिन्द्र मन्दिर का महात्म्य बताते हुए कहा गया यहाँ इन्द्र को अहिल्या वाले श्राप से मुक्ति मिली थी कन्याकुमारी में सूर्य नारायण का आना और अस्त होना दोनों ही रमणीक हैं। सनातन धर्म में सूर्य को परमात्मा का दर्जा प्रदान किया गया है।

गणपति गिरपति गोपती गिरिजा गौरि दिनेश।
ईश पचं मम दास के हरो सुपंच क्लेश।।

ये पाँचों ही परमेश्वर हैं। गणपति (गणेश जी), गिरपति (शंकर भगवान), गोपती (भगवान विष्णु), गौरि (माँ जगदम्बे), दिनेश (सूर्य नारायण) महाराज श्री ने सूर्य नमस्कार की। सूर्य अस्त के समय को समुद्र के किनारे भजनों की बहार भगवान और गुरु महाराज की आरतियाँ गाई गयीं। समुद्र के बीच में सन्त त्रुवल्लर एवं स्वामी विवेकानन्द स्पार्क सबके मन को मोह रहा है। स्वामी विवेकानन्द वहाँ तीन दिन के लिए ध्यानस्थ हुये वहाँ एक ध्यान कक्ष भी बना है जिसमें बैठकर सभी प्रेमियों एवं गुरु महाराज जी ने ध्यान किया तत्पश्चात् लौटकर मद्रास आये तीर्थ यात्रा के उपरान्त सभी प्रेमियों का हृदय अहोभाव से भरा हुआ था। फिर आगे मद्रास में चार दिन का कार्यक्रम हुआ। इस बीच में कई प्रेमीजन श्री तिरुपति बालाजी के दर्शन करने के लिए गये जो साक्षात् वैकुण्ठ सा प्रतीत होता है।

मद्रास में ८ से १२ सितम्बर तक

सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पुण्यतिथि

सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पुण्य तिथि के सुअवसर पर ६ से १२ सितम्बर ४ दिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ साहब रखा गया। बड़ी श्रद्धा प्रेम पूवर्क अपार जन समूह की उपस्थिति मध्य मनाया गया। पाठ का आरम्भ संत हरीओमलाल द्वारा किया गया। इसी अवसर पर सन्त स्वामी जयदेव जी महाराज, सन्त श्री नामदेव जी महाराज, सन्त झामनदास, सन्त श्री मुक्त, सन्त प्रतापराय जी, सन्त नरेशलाल, सन्त हरीशकुमार व सन्त संजय के साथ भक्त मूलचन्द व गायक श्री वीरभान भी उपस्थित थे। साथ में विदेश से पधारे प्रेमी श्यामलाल बहिन कमला, किरण, मेनका आदि शामिल हुए। दिनांक ६ तारीख शाम ४ बजे फूलों की वर्खा व बैण्ड बाजों के साथ जुलूस निकाला गया।

वर्सी महोत्सव में सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के मुखारविन्द से निकले अमृत कण

सन्त जगत में आते हैं जग तारन के लिये,
आदी व्याधी उपाधी टारन के लिये।
पवनि यादि पलि पलि प्रीतम प्यारा।
कद्वहिं कीन विसरनि सज्ञण से सुहारा।।
१. ***जद्वहि खां जुदाई कई आहि सांगिनि।***
तद्वहि खां अख्युनि मां वहनि नीर नारा।।
२. ***मिठो ब्रियो ना मूंखे प्रियनि रे लगे थो***
मिलनि शाल मूंसा जीअ जा प्यारा।।

महापुरुषों के दिन महापुरुषों की याद ले आते हैं। उन्होंने अपने जीवन में गुरु के उपदेश ज्ञान द्वारा अपने को जगाया। सोये नहिं किस पाइया जिन पाइया तिन जाग जागना है आपने आप को जानना मैं कौन हूँ। नदी का जल जब गंगा में जा मिलता है तभी उसको शांति का अनुभव होता है। तैसे यह जीव प्रभू परमात्मा रूपी सागर में मिल शांति सुख को प्राप्त करता है। शरीर है साधन, साधन से साध्य को पाया जा सकता साधना करके, साधना है जप गुरु के नाम का।

कोलम्बो श्रीलंका यात्रा

(पूर्व इतिहास से सम्बन्धित)

नासिक जो कि देव स्थान जहाँ पर कि श्रीराम लक्ष्मण द्वारा शूपर्णखा का नाक, कान काटा गया था। तत्पश्चात् पंचवटी स्थान से सीता का हरण भी रावण द्वारा किया गया था। जिसकी खोज हेतु रामेश्वर तीर्थ स्थान पर वानरों द्वारा पुल बाँधकर रावण की ओर लंका पहुँचे थे।

इस प्रकार ही हमारे गुरुवर नासिक कुंभ मेला पूर्ण कर रामेश्वर मदुराई कन्याकुमारी यात्रा उपरान्त मद्रास से वायुयान द्वारा श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो पहुँचे। हमारे आचार्य पूजनीय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व सन्त मण्डली स्वामी बसन्तराम, स्वामी मुरलीधर, स्वामी चन्दनराम, स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज के साथ सन् १९४८ व १९५६ में श्रीलंका में पधारे थे। वहाँ बने सिन्धु कम्युनिटी हॉल की नीव सद्गुरू महाराज जी के कर कमलों से रखी गयी और इस भवन में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पधारे। आज ८ दिन पूर्व जहाँ कि नया हॉल का निर्माण हुआ था वहाँ पर प्रथम बार सिन्धी समाज के महान सन्त पूज्य सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने पधारकर वहाँ की शोभा बढ़ाई।

इस शोभनीक यात्रा में सन्त मण्डली समेत सत्गुरु महाराज के साथ १४ सदस्य रहे। कोलम्बो में प्रवास वहां रह रहे प्रेमी श्री नारायण दीपा जी के निवास पर रहा। शनिवार दिवस पर उनके घर पर सायंकाल भजन कीर्तन हुआ। जहाँ दर्शन स्वागत हेतु कई प्रेमी पधारे। (बहिन दीपा जी का विवाह पूर्व में स्वामी चन्दनराम जी महाराज की उपस्थिति में पूना में हुआ था) कोलम्बो में सिन्ध के खंडू व हैदराबाद के अन्य कई प्रेमी मिले जिन्होंने उस समय का पूरा समाचार श्री गुरुवर को बताया। आज लगभग ४८ साल उपरान्त श्री सत्गुरु भगतप्रकाश जी महाराज यहां पधारे हैं। पूर्व में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की यात्रा उपरान्त यह मण्डली प्रेम प्रकाश पंथ की प्रथम यात्रा कर रही है। यहाँ पर महात्मा बुद्ध का सर्वोपरि पूजनीय स्थान है। कोलम्बो से लगभग २० कि. मी. दूर कलूतरा में सुन्दर रमणीक स्थल महात्मा बुद्ध का दर्शन किया। वे ३ मंजिल ऊपर विराजमान थे। चारों तरफ सिंहवी भाषा में जन्म का हॉल अंकित था।

रविवार १४ अगस्त को सायंकाल सत्संग सत्गुरु महाराज व सन्त मण्डली का कार्यक्रम सिन्धु कम्युनिटी

हॉल में रहा जहाँ सैकड़ों प्रेमियों ने दर्शन व सत्संग का लाभ लिया।

कोलम्बो में सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के अमृत वचन

कहे टेऊँ मन चेतले अब कछु बिगड़ी नांहि।
दया धर्म शुभ कर्म कर हरि स्मरो मन मांहि।।
अमां रहिजी कीअं ईन्दो हींअ सांगु
फकीरीअ जो। चऊ सुरहो कीअं थीदों।।

इसी भजन दोहा का उच्चारण कर सत्संग आरम्भ किया। मानव का जीवन चौरासी लाख योनियों के बाद मिला है ईश्वर कृपा से समय थोड़ा जीवन अनमोल बार–बार मिलने वाला नहीं। इसी समय में कुछ किया तो आगे परलोक बनेगा। इस जीवन के बाद की यात्रा वही है भक्त ध्रुव का इतहास सुन्दर चित्रण करते हुए कहा कि– बचपन अवस्था में भक्त ध्रुव को सौतेली माता के द्वारा पिता की गोद से उतारा गया। जन्म माता के उपदेश नारद जी के उपदेश से भक्ती कर उच्च स्थान पाया।

इसके पूर्व में सन्त नामदेव जी महाराज, सन्त हरीओमलाल, सन्त नरेशलाल, सन्त श्रीमुक्त व वीरभान द्वारा सुन्दर भजनामृत का पान कराया गया। सारी संगति सत्संग का आनन्दामृत पाकर धन्य होने लगी।

–संत हरीओमलाल व
सन्त प्रतापराय जी की कलम से

दीपावली भजन

थलु : अजु ड्रियारी खूबु मल्हायो राजा रामचन्दु घरिआयो

1. *रामु राजा रावणु मारे धरतीअ जो जहिं भारू उतारे, अची धर्म जो राजु हलायो।।*
2. *राम अचण सां सभु सुख थियड़ा दुःख दर्द सभु दूरथी वियड़ा, मिली जय ज यकार मनायो।।*
3. *महबत जी सभु खाओ मिठाई, कुल्फति कौड़ी कढी कचाई वेही रामनाम गुण ग़ायो।।*
4. *प्रेम ड्रीअनि जी झिरमिरि लाए, रामकथा जी जोति जग़ाए, अन्दर जी ऊंधहि मिटायो।।*
5. *''श्याम'' कयो अहिड़ी सची ड्रियारी रामजिया बणी सत्वीचारी, सभ वैरू विरोधु हटायो।।*

मीनू श्याम प्रेम प्रकाशी
जयपुर (राज.)

आँखन देखी

(१) २४ अगस्त :- त्रम्बकेश्वर में आयोजित सत्संग भण्डारे का विहगंम दृश्य देखते ही हृदय गद्गद् हो उठा। सद्गुरू महाराज जी के नेतृत्व में कर्मठ सेवाधारियों की सेवा लगन से सुव्यवस्था देखकर।

(२) २५ अगस्त :- रात्रि ८ बजे सत्संग समापन के पश्चात् भोजन प्रसादी पाकर भक्त प्रेमी अपने अपने प्रवास स्थल की ओर जाने के लिये थे कतार बद्ध। ८–१० वाहन उनको ले जाने के लिये बार–बार चक्कर लगाकर प्रेमियों को गन्तव्य पर छोड़कर आ रहे थे। और इसी समय पूज्य महाराज श्री को ज्ञात हुआ कि एक स्थान से कुछ यात्री प्रेमी अस्वस्थता के चलते आश्रम पर सत्संग भण्डारे में सम्मिलित नहीं हुए हैं। महाराज श्री ने एक सेवाधारी मनोहरलाल (अमरापुर पुस्तक भण्डार) को साथ लिया। उस भक्त ने महाराज श्री से गाड़ी बुलाने की आज्ञा चाही तो महाराज जी ने कहा – कि देख रहे हो कितनी संख्या में भक्तगण कतारों में जाने के लिये खड़े हैं मेरे एकजने के लिये गाड़ी को व्यस्त करना गलत होगा और महाराज श्री ऑटो में उस सेवाधारी के साथ उस स्थान पर उन प्रेमियों का कुशल क्षेम जानने पहुँचे।

(३) २५ अगस्त :- रात्रि ११:३० बजे स्थान वृन्दावन मंगल कार्यालय– एक सेवाधारी सांवल ऊपर आता है और बताता है महाराज श्री जी नीचे आपको बुला रहे हैं और आज्ञा करी लगभग २५–३० प्रेमी आये हैं, उनकी यहीं पर व्यवस्था करना है। सेवकों के भक्तों का इतना बड़ा समूह होते हुए महाराज श्री जी स्वयं भक्त प्रेमियों की के आवास भोजन जलपान इत्यादि की व्यवस्थायें की देखरेख स्वयं कर रहे थे। **सत्गुरू टेऊँराम देखी तेरी महान शक्ति।**

–कार्यालय प्रतिनिधि

धमतरी के लिये सहयोगी

धमतरी जिला रायपुर (छत्तीसगढ़) क्षेत्र के लिये श्रीमती लक्ष्मीदेवी पंजवानी द्वारा: श्री राजेश गोपालदास पंजवानी, राम सागर पारा, श्रीचौक, टेली. 493773 को प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रचार प्रसार के लिये सहयोगी नियुक्त किया गया है।

श्री अमरापुर समाचार दर्शन

सद्गुरु शान्तिप्रकाश जी महाराज की ११वीं पुण्यतिथि सादगी से सम्पन्न

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी परम शिष्य, गौ–पालक, कृष्ण स्वरूप परोपकारी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज को कोई भी भुला नहीं सकता है।

मानवता के अवतारी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणा का स्त्रोत है। इन्होंने बचपन से ही सबको प्रेम का पाठ पढ़ाया सभी को प्रेम से रहना, अमीर–गरीब में अन्तर न रखना, गौ–रक्षा करना व एकादशी के व्रत का प्रचार किया।

उनके जीवन रूपी पुष्पों में इतनी सुगन्ध थी कि स्वामी जी ने इस सांसारिक चोले का त्याग तो एक दशक पूर्व ही कर दिया पर इसके गुणों की खुशबू अभी भी सम्पूर्ण धरातल पर विचरित होकर उनकी उपस्थिति का आभास कराती है।

ऐसे महापुरुषों के गुणों का बखान अगर हम करने बैठेंगे तो पृष्ठ कम पढ़ जायेंगे। उनके लिये तो बस ऐसा ही कहा जा सकता है कि ऐसे महापुरूषों को कभी नहीं भुलाया जा सकता है। इतने गुणवान महापुरुष का वर्सी उत्सव भी अमरापुर धाम की धरा पर मनाया गया।

१०–१४ अगस्त तक मनाये गये वर्सी उत्सव के प्रारम्भ के दिन अर्थात् १० अगस्त रविवार के दिन प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् सत्संग गंगा की शुरुआत हुई जिसमें सभी सन्तगणों ने सद्गुरु महाराज श्री के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुये सद्गुरु श्री के गुणों का बखान किया और फिर सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अमृत वचनों का कैसेट्स चलाया गया। तत्पश्चात् श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्री मदभगवत गीता के पाठ को आरम्भ करके वर्सी उत्सव की शुरुआत हुई।

इस प्रकार प्रातःकालीन सत्संग गंगा के पश्चात् सांयकालीन सत्संग गंगा शाम ५ से ७ बजे तक चली। जिसमें महाराज श्री का गुणगान, आरतियों का आयोजन हुआ।

१०–१३ अगस्त तक हर रोज सत्संग गंगा बहती रही जिसमें आकर हर रोज प्रेमीगण सत्संग गंगा में डुबकी लगाकर अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को कृतार्थ कर रहे थे। इसी के अन्तर्गत १२ अगस्त को रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर सद्गुरू महाराज को रक्षा सूत्र बांधे गये, सद्गुरू महाराज जी का ६७ वां जन्मदिवस भी आज बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

हर रोज हो रहे सत्संग गंगा में प्रेमीगण इतने तन्मय हो गये कि आखिर वो दिन आ ही गया। वर्सी उत्सव के अन्तिम दिन १४ अगस्त गुरुवार कितना अनूठा संगम था। एक तो सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का वर्सी उत्सव व दूसरा सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अवतरण दिवस। इस दिव्यकारी अनूठे संगम पर प्रेमीगण प्रातःकाल ही श्री दरबार आने लगे।

बड़ी ही सादगी से सम्पूर्ण श्री दरबार को शोभायमान किया गया था।

दिवाकर भगवान के तीव्र तेज से प्रेमियों को बचाने के लिये सत्संग परिसर के बाहरी भागों को परदों से ढ़का गया था। वहीं सत्संग मंच सन्तगणों से शोभित व सत्संग पण्डाल प्रेमीयों से अलंकृत हो रहा था। मंच के मध्य में पूर्व की भांति विशेष दिनों की तरह प्रकोष्ठ बनाया गया जिसमें विराजित थे हमारे प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के महान विभूषित सन्तगण, आचार्य श्री जी, सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज के तैलीय चित्र।

इन दिव्यकारी प्रतिमाओं की आभा को ओर ज्यादा अंलकृत करने के लिये पुष्पो व लताओं से सजाया गया। वहीं नीचे समाधिस्थल पर भी पुष्पों की नयनाभिराम सजावट से नेत्र प्रफुल्लित हो उठे।

अरे ये क्या सत्संग गंगा की शुरूआत हो चुकी है। मंच पर विराजित सन्तगणों ने अपने मुखारविन्द से स्वामी जी के गुणों पर प्रकाश डाला कि स्वामी जी हमेशा मानवता के पुजारी, दया की मूर्ति थे। उन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन गुरू के मंत्र का प्रचार किया। उन्होंने "जय श्री कृष्ण" मंत्र का जाप किया। वे कृष्ण भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा भाव से ओत–प्रोत थे। उन्होंने श्री अमरापुर दरबार को धरती का स्वर्गलोक बताया।

गुरू प्रार्थनाष्टक प्रवचनों के पश्चात् पाठ साहब का भोग डाला गया व सोलह शिक्षाऐं आरती बोलकर इस वर्सी उत्सव की समाप्ति की गई। तत्पश्चात आम भण्डारा हुआ जिसमें अपार प्रेमीयों ने प्रसाद ग्रहण किया।

गुरूकृपा

माता लीलावन्ती का वर्सी महोत्सव सम्पन्न

जयपुर। १६ से २१ सितम्बर २००३ तक माता लीलावन्ती, इन्दिरा बाजार में पूज्य माता लीलावन्ती जी का ३३वाँ वर्सी महोत्सव श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व प्रेम प्रकाश सन्त मण्डली के सानिध्य में माता वसीबाई जी की देखरेख में ट्रस्ट द्वारा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री गुरु ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ साहब रखा गया। प्रतिदिन प्रातः ८ से १० व सायं ४ से रात्रि ६ बजे तक भजन, कीर्तन, सत्संग की मौज में हजारों प्रेमी लाभान्वित हुए।

इन्टरनेट पर सत्संग–सूचना

सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज की कृपा से हम सारे दुनिया के प्रेम प्रकाशियों को न्योता देते हैं कि वह "अपने घर पर सत्संग" में भाग लें, इसमें कोई भी भाग ले सकता है। सिर्फ थोड़ी सी श्रद्धा की जरूरत है। कुछ साल से हमें इच्छा थी कि हमारे प्रेम प्रकाश पंथ का वेब पैज हो, जिसमें हम नए भजन, तस्वीरें हमारे गुरुदेव के बारे में कुछ बातें, प्रार्थना, यह सब छपा सकें और आज यह हम कर सकते हैं।

हम एक कदम आगे बढ़ चुके हैं, बैव पर हमने वर्तमान सत्संग एक बार महिने के पहले रविवार को शुरु किया है। अगर पहले रविवार को मेला है तो अगले रविवार को सत्संग होगा। यह सत्संग हम प्रार्थना से शुरु करते हैं, फिर कुछ भजन गाते हैं और आखिर में आरती और पल्लव से समाप्त करते हैं। कभी कभी मेलों पर सत्गुरु महाराज कृपा करके हमें अपने कुछ वचनों से निहाल करते हैं।

हमें बहुत खुशी होगी अगर आप भी हमारे साथ शामिल होंगे। आप जो भजन गाना चाहते हैं वह पहले से ही ई–मेल पर भेज देना है। आपको एक नम्बर दिया जाएगा। जिसको आप ध्यान से देखें।

आप इस पते पर अपना भजन भेज सकते हैं।
e-mail : amrapur@premprakashpanth.com

इस शुभ कार्य का शुभ आरम्भ सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा किया गया है।

सूचना

१. सत्संग के समय पर चैट करना मना है।

२. जो भी ऐसा करेगा उसे उसी उक्त सत्संग छोड़ना पड़ेगा।

३. इस सत्संग में भाग लेने के लिए आपको Micro phone और Speakar की जरूरत है।

४. सत्संग में भाग लेने के लिए आपको Yahoo Mesenger down load करना है और हमारा ID Amrapur Spain

Disha Sima Tekchandani, (SPAIN

प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर का वार्षिक महोत्सव

पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का ब्यावर आगमन पर भव्य स्वागत

प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर के वार्षिक महोत्सव (२५ से २६ सितम्बर २००३) में २६ सितम्बर को श्री अमरापुर वाहन द्वारा सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व उनके साथ पधारर संत मण्डली, संत दयाप्रकाश, संत नामदेव (हांगकांग), संत हरिओमलाल (ग्वालियर), संत झामनदास (भीलवाड़ा), संत नरेशलाल (इन्दौर), संत नरेश प्रेम प्रकाशी, संत परसराम प्रेम प्रकाशी, भगत मूलचन्द, भगत श्रीमुक्त आदि संत मण्डली का संत भोलानाथ, श्री नानकराम, श्री उद्धवदास, दादी सती, दादी कमला एवं ब्यावर शहर के हजारों प्रेमियों द्वारा फूलों की बरखा कर भव्य स्वागत किया गया। दिनांक २८ सितम्बर को परम श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री जी का भी महोत्सव में पधारने पर हार्दिक स्वागत किया गया।

निश्चित समयानुसार सद्गुरु महाराज जी अपनी संत मण्डली के साथ ब्यावर दिनांक २६ सितम्बर २००३ को दोपहर १२ बजे पहुँचे। ब्यावर शहर के विनोद होटल रेल्वे स्टेशन चौराहे पर प्रातः १०:३० बजे से ब्यावर, अजमेर, पाली, सुग.रेपुर से पधारे सैकड़ों प्रेमियों ने अपने प्यारे सद्गुरु महाराज के दर्शन स्वागत के लिए फूलमालायें लेकर प्रतीक्षा की। दोपहर १२ बजे रेल्वे स्टेशन चौराहे पर एक विशाल जन सैलाब ने बैण्ड बाजों के साथ सद्गुरु महाराज व उनके साथ पधारे संत मण्डली का स्वागत कर अपने को धन्य किया। रेल्वे स्टेशन चौराहे से सद्गुरु महाराज को एक सजे रथ पर आसीन कराकर एवं पीछे अन्य संतों को कारों में बैठाकर आगे पीछे हजारों प्रेमियों के साथ जुलूस ब्यावर शहर के किशनगंज चांगगेट से गुजरता हुआ निकला। तीव्र गरमी के बावजूद भी ब्यावर के निवासियों द्वारा सद्गुरु महाराज व संत मण्डली का बड़े ही उमंग व जोश के साथ फूलों की बरखा कर सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की जयघोष के साथ स्वागत किया। ठीक १ बजे दोपहर सद्गुरु महाराज जी संत मण्डली सहित शोभायात्रा में प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे।

दिनांक २६ सितम्बर ०३ को सायंकालीन एवं दिनांक २७ सितम्बर ०३ से २६ सितम्बर ०३ तक प्रातः सायं सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व उनके साथ पधारे संत मण्डली ने अपनी अमृतमयी सत्संग वाणी से ब्यावर शहर में सत्संग रूपी गंगा का प्रवाह कर प्रेमियों को लाभाविन्त किया। इस अवधि में सद्गुरु महाराज व संत मण्डली ने प्रेम प्रकाश आश्रम (दादी सती, दादी रूकमणी) के यहाँ एवं अनेक प्रेमियों के निवेदन पर उनके निवास पर पधारकर सत्संग आदि कर उन्हें अपने पावन दर्शनों से लाभाविन्त किया।

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व उनके साथ पधारे संत मण्डली एवं अजमेर से पधारे परम श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज आदि संतों के अमृतगंगा रूपी संतवाणी से हजारों प्रेमी मंत्रमुग्ध व तन्मय होकर सत्संग श्रवण करते थे।

गुरु दरबार तीर्थ स्थल है। जो श्रद्धा के साथ गुरू दरबार में निस्वार्थ होकर सेवा करता है एवं सत्संग श्रवण करते हुये गुरु दरबार आता है एवं नाम सुमरन करता है गुरू महाराज उसका फल अवश्य देते हैं। इस प्रकार के उद्गार व्यक्त किये सन्त हरिओमलाल जी ने सत्संग सभा में।

परम श्रद्धेय पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने सद्गुरु महाराज की महिमा का गुणगान कर बतलाया कि सत्गुरु महाराज एक महापुरुष संत थे। उन्होंने अपने निज स्वरूप को पहचानकर हमें बतलाया कि यदि कोई जीव इस जन्म में पापी है। नास्तिक है या आध्यात्मिक है यह सब हमारे द्वारा पूर्व जन्म में किये गये कर्मों का परिणाम है। पुण्य

करने से सुख की प्राप्ति होती है एवं नाम से ईश्वर की प्राप्ति होती है। इसलिये हमें संतों की शरण में जाकर अपने निज स्वरूप को पहचानकर नाम का सुमरन कर अपना जीवन सफल बनाना चाहिये।

परमपूज्य सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज अपनी ओजस्वी अमृतवाणी में उपस्थित हजारों प्रेमियों को अमृत पिलाते हुए बता रहे हैं कि :–

१. *संत गुरू परमात्मा, साचे संगी जान।*
कह टेऊँ इन तीनों से कर ले प्रेम सुजान।।

२. *सचो संत स्वामी टेऊँराम प्यारो।*
करे वियो करे वियो करे वियो भज़नु।
शहर खण्डूअ में देह धरियाईं।
कृष्णा जे घरि जन्मु लधाईं।
विरह में वेराग़ी तुरितु बणियो त्याग़ी ।

३. *संतनि पहिंजो रूप सुञातो ।*
पूर्ण आत्म पद खे पातो निसंगु थी निर्माण।।

सद्‌गुरु महाराज ने बचपन से ही संसार के भौतिक सुखों का त्याग कर मास्टर आसूराम जी को अपना गुरु बनाकर उनसे नाम दान लेकर एकान्त एकचित होकर जंगलों, शमशानों में जाकर नाम सुमरन कर ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग खोजा। माता कृष्णा, माता यशोदा, माता कौशल्या ने अपनी तपस्या साधना करके राम कृष्ण भगवान एवं सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जैसे लाल पुत्रों की प्राप्ति कर उन्हें जन्म से प्रभु के गुण महिमा बतलाकर उसे पाने का उपदेश दिया। सद्‌गुरु महाराज ने अपने निज स्वरूप को पहचानकर ईश्वर को प्राप्त करने का साधन खोजकर हमें बतलाया कि:–

दोहा :

१. प्रभु तोखे आंऊ परचायां।
जहिं ग़ाल्हे तूं प्रभु परिचीं ग़ाल्हि ऊहामां सरिचायां।
साधासंगति में रोजु अची मां, गोविन्द तुंहिंजा गुण ग़ायां।
हर हर तोखे हथिड़ा जोड़े, बदियूं पहिजूं मां बख्शायां।
जग़ु जा नाता टोड़े सभेई लालण तोसां लिव लांया।
कहे टेऊँ आंऊ जहिंड़ी तहिड़ी गोली तुंहिजे घरि आहियां।
२. मिली दुर्लभ मानुष देही थई, जहिंमे साज सुखनि जा सभई थई।
हिन देहीअ खातिर देव सिकनि छद्‌दे स्वर्ग़ु अची इंसान बणनि।
तोखे पापी कीअं था पाप वणनि जूणि न जेहड़ी तेहड़ी अथइ

श्लोकः

३. निद्रा भोजन भोग भग, ये पशु समान।
नर न ज्ञान निज अधिक तां, ज्ञान बिना पशु जान।
४. वृक्ष देखन में अति सुन्दरे, नहीं छाया नहीं कन्धरे।
नहीं फलफूले नहीं पतरे, वृक्ष बोया तो क्या बोया।
पदार्थ और सब पाये हरि न पाया तो क्या पाया।

सद्‌गुरु महाराज ने अपनी अमृत वाणी में हमें समझाया कि हमें जो यह मानुष देह मिला है वह बहुत ही दुर्लभ है हमें चौरासी लाख योनियों के जन्मों के बाद यह देह मिली है। इस मानुष देह के लिये स्वर्ग के देवी देवता भी तरसते हैं, जब उनके स्वर्ग में पुण्य समाप्त हो जाते हैं तो वे नीचे आ कर मानुष देह में जन्म लेकर पुनः प्रभु परमात्मा का स्मरण ध्यान करते हैं। जब हम अपनी माता के गर्भ में उल्टे–लटके हुये कुम्भी नरक में होते हैं। उस समय हम प्रभु से वायदा करते हैं कि हे भगवान मुझे इस कुम्भी नरक से बाहर निकालो तो मैं तेरा भजन करूंगा। परन्तु हम ऐसा नहीं करते हैं। परमात्मा ने हमें सुन्दर देह दी है इसमें सोचने समझने की शक्ति दी है जो पशुओं में नहीं है। यदि हम इस शक्ति के द्वारा प्रभु परमात्मा को प्राप्त नहीं करेंगे तो हमारा मानुष चोला पशुओं से भी गया बीता होगा क्योंकि पशुओं के मरने के पश्चात् उसकी खाल हड्डियाँ और कई चीजें काम आती हैं। मगर हमारा शरीर मरने के पश्चात् कुछ काम का नहीं रहता इसलिये हमें अपने निज स्वरूप को पहचानकर परोपकार, पुण्य, कर्म कर, सत्‌गुरु–संतों का संग कर, नाम सुमरण कर अपना अन्त समय सफल बनाना चाहिये। हमारे अन्दर जो इन्द्रियाँ हैं वह भगवान का नाम श्वासों के द्वारा स्मरण करने का साधन है। इसलिये हमें अपना एक–एक कीमती श्वांस सत्संग एवं नाम स्मरण में लगाना चाहिये। सद्‌गुरु महाराज ने हमें आगे अपनी अमृतवाणी में बतलाया कि :–

भजन :
१. *कहे टेऊँ ड्रिसु अखिड़ियूं खोले।*
अन्दर वैठो केर थो ब्रोले।
२. *मृग की नाभि है कस्तूरी अपने से वह जानत दूरी।*
ढूंढत वन-वन मिलत न कार्हीं।
३. *मुंहिजो मन विषयुनि खे छद्दे तुहिंजे ध्यान में मग्न रहे।*
तुहिंजे सुमरन ऐ चिन्तन जी मन में लग्न रहे।
भुली सुध तन मन जी वञे अहिड़ो प्रेम जो पियारियो जाम।
गुरुदेव मिठा मनठार।
४. *जगुत जा भोगु भगुवन्त खां बन्दा तोखे भुलाइन था।*
ड्रिसण में थई मिठी माखी, दुखी थींदे चखे चाखी।
समझ रखी तू बणी साखी जिगर खे जलाइन था।

सद्गुरु महाराज ने समझाया है कि हम ईश्वर के अंश हैं हमारे अन्दर जो मन है उसके द्वारा हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के पूछने पर बतलाया कि मन चंचल होने पर उसे संसार के व्यवहारों से दूर रखकर प्रतिदिन अभ्यास से प्रभु परमात्मा का एकचित सुमरन कर उसे प्राप्त कर सकते हैं।

सद्गुरु महाराज ने हमें समझाया है कि अन्त समय में हमारे साथ संसार के भौतिक सुख, धन, पदार्थ, संगे–सम्बन्धी, दोस्त, यार साथ में नहीं जाते हैं, जाता है केवल ईश्वर का नाम सुमरन, परोपकार, पुण्य आदि। इसलिये जो मनुष्य सच्ची श्रद्धा के साथ राम नाम का सुमरन करता है उसका भगवान, गुरु महाराज सब दुख, दर्द नाश करते हैं। जैसे भक्त प्रहलाद ने कुम्हारी के द्वारा राम स्मरण शब्द से आग में से बिल्ली के बच्चे जीवित बचते देखने पर राम का स्मरण किया एवं बाल्मिकी ने राम का उल्टा शब्द स्मरण कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त किया जिससे भक्त प्रहलाद को उसके पिता हिरणकश्यप द्वारा पहाड़ों से गिराने पर भी उसे चोट नहीं पहुँची। भगवान ने उसके सारे दुख समाप्त कर दिये। इस तरह भगवान कहता है कि मैं तुम्हारे सम्मुख खड़ा हूँ तुम यदि २ कदम मेरे आगे शरण में आओगे याद करोगे। तो मैं ६० कदम आगे बढ़कर तुम्हारी रक्षा करूँगा। इसलिये जब अन्त समय में यम के दूत परेशान करते हैं तो नाम सुमरन से यम के दूत भी भाग जाते हैं। हमारे जीवन में जो भी सुख–दुख आते हैं वह प्रभु परमात्मा की कृपा समझकर हमारे पूर्व जन्म के कर्मों का पुण्य मानकर हमें खुशी–खुशी स्वीकार करने चाहिये। सद्गुरु महाराज ने बतलाया कि हम प्रवृति मार्ग अर्थात् गृहस्थ जीवन में भी रहकर संसार के भौतिक सुखों से दूर रहकर नाम सुमरण कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये हमें इस दुर्लभ मानुष देही को सफल बनाने हेतु गुरु द्वारा दिये गये मंत्र का नाम सुमरन कर संतों के अमृतरूपी सत्संग से आत्मज्ञान प्राप्त कर ईश्वर को प्राप्त करना चाहिये। सद्गुरु महाराज ने अन्त में सुमति का दान देते हुये मृदुल वाणी में आशीर्वाद दिया कि :–

दया करणी थी मया करणी थी सद्गुरु पहिंजे दास ते।
मालिक पहिंजे महिंर जी नजर धरणी थी मया करणी थी
सद्गुरु पहिंजे दास ते।
कहे टेऊँ गुरु ब्राझ सां ब्रेड़ी तरणी थी मया करणी थी
सद्गुरु पहिंजे दास ते।

दिनांक २८ सितम्बर को दोपहर आश्रम में ब्रह्मभोज का आयोजन भी किया गया। रात्रि को ब्यावर शहर के छोटे–छोटे तीन बालकों हेमन्त, कमल, प्रदीप ने अपने छोटे–छोटे हाथों से ढोलक, झांझ, बाजे पर सद्गुरु महाराज के भजन गाकर उपस्थित सारे प्रेमियों को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

दिनांक २७ सितम्बर ०३ को प्रातः हवन कर ध्वजारोहण कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। दिनांक २६ सितम्बर को प्रातः पाठों के भोग कार्यक्रम के पश्चात् दोपहर आम भण्डारा भी किया गया।

दिनांक २६ सितम्बर ०३ रात्रि को सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १०७ वां जन्मोत्सव भी मनाया गया। सद्गुरु महाराज ने पल्लव पाकर संगत को आशीर्वाद देकर उत्सव का समापन किया। हजारों प्रेमियों ने सद्गुरु महाराज के पावन दर्शन कर अपने को लाभान्वित किया।

दिनांक ३० सितम्बर ०३ को प्रातः सद्गुरु महाराज अपने संत मण्डली के साथ अमरापुर रथ से कोटा के लिये प्रस्थान कर गये।

मोहन शिवनानी, (अजमेर) ब्यावर से

सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव की कोटा मे धूम

कोटा मे सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली का भव्य स्वागत (३० सितम्बर से ३ अक्टूबर)

कोटा– परम पूजनीय अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १०७ वां जन्म महोत्सव श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता में मनाया गया, इस अवसर पर संत जयदेवजी, सन्त नामदेव जी, सन्त हरिओमलाल जी, सन्त मोनूराम जी, सन्त शम्भूलाल जी, सन्त नरेश कुमार, सन्त परसराम, सन्त श्री मुक्त, भगत मूलचंद जी एवं सिन्ध से आये हुए प्रेमी भी सम्मिलित थे।

३० सितम्बर से ब्यावर से सड़क मार्ग द्वारा श्री अमरापुर रथ में सद्गुरू महाराज एवं संत मण्डली का कोटा आगमन पर, कोटा प्रवेश द्वार पर सन्त श्यामलाल जी के नेतृत्व में स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों के साथ बहुत बड़ी संख्या में प्रेमियों ने हर्षध्वनि के साथ पुष्प वर्षा व सद्गुरू भगवान की गगनभेदी जय जयकार के साथ स्वागत किया गया। यहाँ से गाड़ियों के काफिले में सद्गुरू महाराज व संत मण्डली को श्रीपुरा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम लाया गया, यहाँ पर पूज्य स्वामीजी का कोटा वासियों द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया। प्रतिदिन प्रातः ७ से ६ व सांय ५ से ८ बजे तक पूज्य स्वामीजी व सन्त मण्डली के सत्संगामृत का पान व दर्शन हजारों प्रेमियों ने किया। २ अक्टूबर को कोटा के लखमीचन्द ग्रुप द्वारा भजन संध्या की प्रस्तुति भी भव्य रही। ३ अक्टूबर को सांय ५ बजे स्वामी टेऊँराम भजन मण्डली द्वारा शहनाई की मधुर गूंज में डांडिया नृत्य की प्रस्तुति ने प्रेमियो को अपने अपने स्थानों पर नाचने के लिये मजबूर कर दिया, इसके पूर्व भजन मण्डली द्वारा भजन व सिन्धी लाडो की प्रस्तुति भी जोरदार रही। सत्संग सभा के अंत में पूज्य स्वामी जी द्वारा १०७ रंग बिरंगे दीपक प्रज्वलित करके १०७ पौण्ड के केक को बधाई गीत की मधुर गायन के बीच में काटा जाकर प्रेमियों–सन्तों को मुख मीठा कराया गया। इस अवसर पर आज कोटा शहर की विभिन्न धार्मिक सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। अन्त में आतिशबाजी प्रदर्शन भी सराहनीय रहा। कोटा की दासवानी कोचिंग में पूज्य स्वामीजी व सन्त मण्डली का स्वागत डॉ. अनिल कुमार व विजय दासवानी द्वारा किया गया। चिकित्सा, इन्जीनियरिंग व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में अव्वल रहे छात्र–छात्राओं को पूज्य स्वामी जी के कर–कमलों द्वारा सम्मानित किया जाकर पुरस्कृत किया गया।

स्वामी टेऊँराम भजन मण्डली द्वारा प्रस्तुत भजन

जनमु मलहायो मिली मौज मचायो
मुहिंजो सत्गुरू आयो

१. सभिनि खे लख–लख वाधायूं
जनमु गुरूअ जो गॾिजी मनायूं
शहर–शहर खुशियूं मनायूं
चरननि में सीसु झुकायूं

२. नामु जपाइण सत्गुरू आयो
जीव ईश जो भेदु मिटायो
धर्म सनातन झंडो झुलायो
प्रेम प्रकाशी पंथु हलायो

३. घर–घर अजु जोतियूं जगायो
पाण नचो ऐं ॿियनि खे नचायो
सभिनि जो थियो लायो सजायो
ताड़ी वॼायो सभु नचो ऐं ॻायो

४. देहि धरे आयो दरवेशनि वारी
आयो सत्गुरू पर उपकारी
महिमा सचपचु न्यारी
ब्रह्मानन्द मां वञां ॿलिहारी

भजन– **जीए सांई जीए मुहिंजो सर्वानंद जीए**
गेरू चोलो गेरू टोपी स्वामी सर्वानंद जीए

भजन– **वेठो आहे सांई मुखे परिवाह नाहे काई**
मुहिंजो नंगु आ गुरूअ ते स्वामी सर्वानंद ते

भजन– **अजु ॾीहु सभाॻो आ आयो**
मुहिंजो सत्गुरू सर्वानंद आ ॼायो

सन्त हरिओमलाल ने सत्संग में बताया शरीर साधन है साधना करके इस मानव जीवन को सफ

बनाना है। नाम तो स्मरण करना है साथ–साथ अपने जीवन के विचारों आचरणों कर्मों को पवित्र रखना है। बुद्धि के अर्न्तगत गुरू के ज्ञान के प्रकाश से मन इन्द्रिया भी वश में होती है।

जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर सन्त नरेशलाल (इन्दौर) ने इस बात पर जोर दिया कि हमारा परम कर्तव्य है कि गुरू महाराज के इस संदेश को घर घर पहुंचाएं कि बाहर की तलवार का वार एक से दो कर देता है पर प्रेम की तलवार का वार दो को मिलाकर एक कर देता है। सन्तों के उपदेश शिक्षाएं हमारे जीवन के हर मोड़ पर साथ देती हैं व रक्षा करती हैं।

स्वामी नामदेव (हांगकांग) कहते है– सन्तों का संग पाकर हमारे व्यवहार व परमार्थ दोनों सुधर जाते है। गुरू शिष्य की, राजा अपनी प्रजा, माता–पिता अपने बालक की रक्षा करते है।

स्वामी जयदेव जी सत्संग की मौज में बता रहे हैं–

मालिक संदीअ महिर सां दुख दूरि थी वञनि था

१. आदो अचनि जे कट्ठहिं पर्वत, पहाड़ भारी
रेते समान रोड़ा चकचूर थी वञनि था

२. ब॒रंदड़ अचे जे अग्नी इन्सान जे भी आदो
चन्दन समान शीतल से दूरि थी वञनि था
महापुरूष जे वचन से विश्वास जनि कयो
दुनिया जे दौड़ में सो फूले सदा फले

गुरू सन्तों के वचनों पर विश्वास से दुख दूर हो जाते हैं **केवल सभ जन सुख चहे दुख को चहे न कोय** सभी प्रार्थना रूप में भजन बोलें, सन्तो के संग में आकर ऐसी वस्तु मांगे जिससे हमारा जीवन सुधर संवर जाये संतों के ज्ञान श्रवण मनन करने से स्थिति पाकर जनम–मरण के चक्कर से यह जीव–मुक्त हो जाते हैं।

सन्त मोनूराम जी ने जयपुर से पधार कर कीर्तन के उपरान्त भजन गाया:–

बिगड़ी मेरी बनादे स्वामी सर्वानंद प्यारे
जयपुर के रहने वाले स्वामी सर्वानंद प्यारे

सन्त श्यामलाल कोटा ने प्रार्थना करते हुए भजन गाया–

सतगुर मूखे मन मां कीन विसारिजांइ
दर्शन देई दिलि ठारिजांइ

सतगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के अमृत वचन–

तुलसी लोहा काठ संग चलत फिरत जल मांहि
बड़े न डूबन देत है जांको पकड़ी बांहि

महापुरूष कहते है उनका आधार लो जो आपको पार करें, मन को ढगमग न करें वाणी की बरसात कृपा को निरन्तर बरसाते हैं आप उनकी ओट लेवें लाल मोती हीरे धन मिलता है कोई लेने वाला होवे

बड़ी मुश्किल कठिन बाजी अवलि आवे को मर मर
दुनी के मोह सागर से तुरन्त जावे वो तर तर
कोई पीवे तो मैं देवा प्याला प्रेम का भर भर

अपने मन को मार कर आवे तभी उसे प्राप्ति होवे, कैसे अपने मन को ईश्वर से मिलायें, भाग्य संस्कार से ये वस्तुए प्राप्त होती है स्वर्ग के भोग की इच्छाओं का त्याग उसे वैराग्य कहते हैं।

जयकुमार चंचलानी, कोटा से

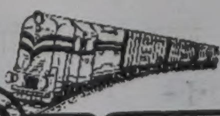
भजन

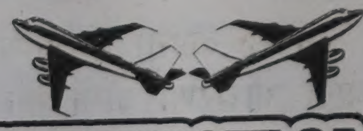
तर्ज: ओरे ताल मिले नदी के जल में नदी मिले सागर में।

ओ मेरे सत्गुरु भगतप्रकाश जी ने अपने तन को तपाया।
अपने मन को तपाया, सारे प्रेमियों को अपना बनाया।।
सारे प्रेमियों के फुरने मन से हटाया हाँ दिल से हटाया।
मन की शान्ती के लिए जाप जपाया हाँ जाप जपाया।।
ओ मेरे सत्गुरु भगतप्रकाश जी ने अपने तन को तपाया।
नासिक शहर में उन्होंने मेला लगाया हाँ मेला लगाया।
देश विदेशों के प्रेमी दर्शन को आया हाँ आया।
गोदावरी नहीं डुबकी लगाया हाँ डुबकी लगाया।
तन मन को खूब धोया दर्शन भी पाया।
ओ मेरे सतगुरु भगतप्रकाश जी ने अपने तन को तपाया।
ओ हमारे सभी सन्त प्यारों ने भी खूब निभाया हाँ खूब निभाया।
तन-मन की सुधि बिसरी, अपने समय को भुलाया, हाँ समय को भुलाया।
गुरुदेव और सारी संगति में ध्यान लगाया।
ऐसी गुरू भक्ति है प्यारे सन्तों में, हाँ प्यारे सन्तों में।
ओ मेरे सत्गुरू भगत प्रकाश जी ने अपने तन को तपाया।
त्र्म्बकेश्वर में उन्होंने उत्सव मनाया हाँ उत्सव मनाया।
अपने सुखों को इन्होने संगत में लगाया हाँ संगत में लगाया।
तन का भी होश नहीं था, कब बुखार आया है, हाँ कब बुखार आया है।
ऐसे है गुरूदेव सारी संगत को तराया, हाँ संगत को तराया।
ऐसी कृपा की मुरली पे भी मन भर आया है, ओ मेरे सत्गुरू मन भर आया है।
भगत प्रकाश जी ने अपने तन को तपाया है ....

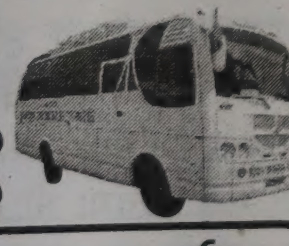
–मुरलीधर खूबचंदानी, गोंदिया







श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष



पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

14 अक्टूबर	2003		दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
15 अक्टूबर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
16 अक्टू. से 17 अक्टू.	2003	तक	शोलापुर	☎ 0217–2601195, 2601306
18 अक्टू. से 19 अक्टू.	2003	तक	भागलकोट	☎ 08354–420749, 425749
20 अक्टूबर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
21 अक्टूबर	2003		पूना	☎ 020–6354909
22 अक्टूबर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
23 अक्टू. से 27 अक्टू.	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
28 अक्टू. से 30 अक्टू.	2003	तक	पूना	☎ 020–6350039
31 अक्टू. से 2 नवम्बर	2003	तक	पिम्परी	☎ 020–7459487
3 नवम्बर	2003		मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
4 नवम्बर से 7 नव.	2003	तक	इन्दौर–उज्जैन	☎ 0731–2468140
8 नवम्बर से 23 नव.	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
24 नवम्बर से 27 नव.	2003	तक	मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
28 नवम्बर से 3 दिस.	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
4 दिसम्बर	2003		अजमेर	☎ 0145–2622526
5 दिसम्बर से 8 दिस.	2003	तक	बड़ौदा	☎ 0265–3093554
9 दिसम्बर से 10 दिस.	2003	तक	अजमेर	☎ 0145–2423993, 2625416
11 दिसम्बर	2003		जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
12 दिसम्बर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
13 दिस. से 15 दिस.	2003	तक	हिसार	☎ 01662–244708
16 दिस. से 20 दिस.	2003	तक	हरिद्वार	☎ 01334–260815,260144
21 दिसम्बर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
22 दिस. से 26 दिस.	2003	तक	अहमदाबाद	☎ 079–2863900
27 दिस. से 28 दिस.	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
29 दिस. से 5 जनवरी	2003-04	तक	मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
6 जनवरी से 7 जन.	2004	तक	नासिक	☎ 0253–2513415

तीज त्यौहार

18	अक्टूबर	2003	शनिवार	तुला सक्रान्ति
21	अक्टूबर	2003	मंगलवार	रमा एकादशी व्रत
23	अक्टूबर	2003	गुरूवार	धनतेरस
24	अक्टूबर	2003	शुक्रवार	छोटी दीपावली
25	अक्टूबर	2003	शनिवार	अमावस्या, दीपावली, लक्ष्मी पूजन, सवार्थ सिद्ध योग सांय ६:२० से रात्रि पर्य
26	अक्टूबर	2003	रविवार	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
27	अक्टूबर	2003	सोमवार	चन्द्रदर्शन, भाई दूज
28	अक्टूबर	2003	मंगलवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
31	अक्टूबर	2003	शुक्रवार	सांई टेऊँराम चौथ (सदगुरू टेऊँराम जन्म दिन, मासिक)
1	नवम्बर	2003	शनिवार	श्री गोपाष्टमी व्रत
2	नवम्बर	2003	रविवार	आंवला अक्षय नवमी (नौमी)
4	नवम्बर	2003	मंगलवार	देव प्रबोधनी एकादशी व्रत, स्वामी धर्मप्रकाश जयन्ती (बड़ौदा में)
8	नवम्बर	2003	शनिवार	श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, गुरू नानक जयन्ती
12	नवम्बर	2003	बुधवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
16	नवम्बर	2003	रविवार	वृश्चिक संक्रान्ति
20	नवम्बर	2003	गुरूवार	उत्पत्ति एकादशी व्रत
23	नवम्बर	2003	रविवार	अमावस्या
25	नवम्बर	2003	मंगलवार	चन्द्रदर्शन

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

जयपुर स्थित प्रेम प्रकाशीयों के परम पावन गुरूधाम

श्री अमरापुर स्थान (मन्दिर) की दैनिक समय सारणी

मन्दिर खुलने का समय

सुबह : 6.00 बजे से 12.00 बजे तक एवं सायं 3.00 बजे से 9.00 बजे तक

प्रतिदिन सत्संग का समय

सुबह : 7.00 बजे से 8.20 बजे तक एवं सायं 4.30 बजे से 6.00 बजे तक

प्रत्येक रविवार

सुबह : 7.00 बजे से 9.30 बजे तक (सत्संग – प्रवचन कैसेट)

सायं 4.30 बजे से 6.00 बजे तक (सत्संग – भजन)

आरती

सायं : 6.00 बजे से 6.20 बजे तक

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार

सुबह : 7.00 बजे से 8.30 बजे तक (सत्संग – गुरु प्रार्थनाष्टक पाठ)

सायं 4.30 बजे से 6.30 बजे तक (भजन संध्या – आरती – सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप)

विशेष ''पूज्य महाराज श्री'' के पावन अवतरण दिवस शनिवार व गुरुवार को प्रातः 8.00 बजे गुरु प्रार्थनाष्टक सायं 6.00 बजे सत्नाम साक्षी का संकीर्तन व ''समाधि-स्थल'' पर पुष्पों की झांकी

नोट :- दोपहर 12 से 3 बजे तक व रात्रि 9 से प्रातः 6 बजे तक मुख्य मन्दिर व मुख्य द्वार बन्द रहेगा। सभी भगवत् प्रेमी समय को ध्यान में रखकर सत्संग व दर्शन का लाभ प्राप्त करें।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

कार्तिकोत्सव

सोमवार 27 अक्टूबर से 8 नवम्बर शनिवार 2003 तक

卐 कार्यक्रम 卐

प्रतिदिन सत्संग का समय

प्रात : 6 से 7 बजे तक प्रभात फेरी एवं 7 से 9 बजे तक प्रार्थना, सत्संग, कार्तिक की कथा

सायं : 4 से 6 बजे तक भजन, सत्संग, आरती

विशेष :

27 अक्टूबर 03	सोमवार	चन्द्र दर्शन
1 नवम्बर 03	शनिवार	गोपाष्टमी (सायं 4 बजे गौ पूजन)
3 नवम्बर 03	रविवार	आंवला नवमी (आंवला वृक्ष पूजन)
4 नवम्बर 03	मंगलवार	हरिप्रबोधनी एकादशी
8 नवम्बर 03	शनिवार	सत्यनारायण कार्तिक उत्सव का समापन, पाठों का भोग, विशाल भण्डारे का आयोजन

अमरापुर स्थान जयपुर

रजि. ग्वालियर संभाग–161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th)   भा.शा.रजि.–29/18/81-II

भजन भगवान श्रीकृष्ण को टेलीफोन

कहाँ टेलीफोन करूँ मेरे भगवान।?
कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।।?

पहला टेलीफोन गोकुल में मिलाया, घण्टी बजी माता यशोदा ने उठाया।
हरि तो गये हैं वृन्दावन धाम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*
दूसरा टेलीफोन वृन्दावन में मिलाया, घण्टी बजी ग्वालबालों ने उठाया।
हरि तो गये हैं बरसाने धाम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*
तीसरा टेलीफोन बरसाने में मिलाया, घण्टी बजी राधारानी ने उठाया।
हरि तो गये हैं मथुरा धाम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*
चौथा टेलीफोन मथुरा में मिलाया, घण्टी बजी माता देवकी ने उठाया।
हरि तो गये हैं द्वारिका धाम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*
पाँचवां टेलीफोन द्वारिका में लगाया, घण्टी बजी रानी रुकमणी ने उठाया।
हरि तो गये हैं सत्संग धाम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*
छठा टेलीफोन सत्संग में लगाया, घण्टी बजी सन्त श्री ने उठाया।
हरि तो कर रहे हैं विश्राम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*
स्वामी जी का नम्बर है (5-1-0), तू भी बन जा सत्संग का हीरो।
तभी तो मिलेंगे तुझे सुन्दर श्याम, कौन सा नम्बर है बताओ भगवान।। *कहाँ टेलीफोन..*

ओमप्रकाश वलेचा, टूण्डला (यू.पी.)

सूचना



समस्त सम्माननीय सदस्[...] सूचनार्थ उनके प्रेषण प[...] ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए। — व्यवस्थापक

सदस्यता क्रं.

श्रीमान

RH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOOTANI
E-19, MADHUVAN COLONY,
NAKA MADAR, AJMER (RAJ)

भगवान् तो आये थे

महर्षि रमण से कुछ भक्तों ने पूछा- 'क्या हमें भगवान् के दर्शन हो सकते हैं ?' 'हाँ, क्यों नहीं हो सकते - परन्तु भगवान् को पहचानने वाली आँखें चाहिये।'

महर्षि रमण ने उन्हें बताया- 'एक सप्ताह तक भगवान् के मन्दिर में पूरी तन्मयता से भगवान् का संकीर्तन करो। सातवें दिन भगवान् आयेंगे, उन्हें पहचानकर, उनके दर्शन कर कृतकृत्य हो जाना।'

भक्तों ने मन्दिर को सजाया, सन्दर ढंग से भगवान् का श्रृंगार किया तथा संकीर्तन शुरु कर दिया। महर्षि रमण भी समय-समय पर संकीर्तन में जाकर बैठ जाते।

सातवें दिन भण्डारा करने का कार्यक्रम था। भगवान् के भोग के लिये तरह-तरह के व्यंजन बनाये गये थे। मन्दिर के सामने पेड़ के नीचे मैले कपड़े पहने एक कोढ़ी खड़ा हुआ था। वह एकटक देख रहा था कि शायद मुझे भी कोई प्रसाद देने आये।

एक व्यक्ति दया करके साग-पूरी से भरा एक दोना उसके लिये ले जाने लगा कि एक ब्राह्मण ने उसे लताड़ते हुए कहा- 'यह प्रसाद भक्तजनों के लिये है, किसी कंगाल कोढ़ी के लिये नहीं बनाया गया है।' वह दोना वापस ले आया। महर्षि रमण यह दृश्य देख रहे थे।

भण्डारा सम्पन्न होने पर भक्तों ने महर्षि से पूछा - 'आज सातवें दिन भगवान् तो नहीं आये।'

'मन्दिर के बाहर जो कोढ़ी खड़ा था वे ही तो भगवान् थे। तुम्हारे चर्मचक्षुओं ने उन्हें कहाँ पहचाना ?' भगवान् के दर्शनों के इच्छुक लोगों का मुँह उतर गया।

(संकलित)

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183